॥ श्री ॥

पद्माला

श्रीराधाकृष्ण चरणकमल चञ्चरीक श्रीमन्त सरदार

बलवन्तराव भैया-
साहब सिन्दे

मदारुल मुहाम राज गवालियरकृत ।

जिसे

पं० लक्ष्मीनारायण ज्योतिषी जनकगंज
लश्कर गवालियरने,

खेमराज श्रीकृष्णदासके,

बम्बई

खेतवाडी ७ वीं गली खम्बाटा लैन,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" मुद्रणयन्त्रालयमें

मुद्रित कराकर प्रकाशित किया ।

सं० १९६८, सन् १९११ ई.

तृतीयावृत्ति २००० प्रति

श्रीः ।

पदमालाके पदोंकी अनुक्रमणिका ।

पद मराठी भाषा।

दोहा।

सदा दासके दाहिने।

इति पद्मालाके पदोंकी अनुक्रमणिका समाप्त ॥

श्रीमन्त बलवन्तराव भैयासाहेब सिन्दे मदारुल-
महाम राज गवालियर.

॥ श्री ॥

॥ श्रीराधारमणो जयति ॥

अथ पदमाला प्रारम्भ
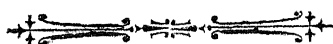
पद १.

जै गणनायक जनसुखदायक, सबलायक जै सिद्धिपती ॥ श्रीशंकरसुत मूरति अद्भुत, प्रथमपूज्य जै विमलमती ॥ १ ॥ सिंदुरचंदन मुनिगणवंदन, विघ्ननिकंदन जनत्राता ॥ करिवरआनन बंधु षडानन, संकट भानन सुखदाता ॥ २ ॥ एकरदन ऐश्वर्यसदन जै, मदनकदनप्रिय धूम्रध्वजा ॥ मोदकप्रासन मूषक आसन, पालक दासन सुत गिरिजा ॥ ३ ॥ जै चंद्रभाल भुजबल विशाल, गल मणिन माल छबिजाल भरी ॥ बलवंत भक्तपर वरद हस्त धर, करिय कृपा उर वसें हरी ॥ ४ ॥

पद २.

मतिबरदानी शारदरानी, गुणगणखानी जगजानी ॥ हंसवाहिनी दास दाहिनी, प्रणत पाहिनी मुनि मानी ॥ १ ॥ शुभ्र सरूपा परम अनूपा, लखि सुर भूपा मोहि रहे ॥ जय जगव्यापक मुनिजनजापक, गुणगणथापक विरद कहे ॥ २ ॥ कर बीण विराजे पुस्तक भ्राजे, मतिभ्रम भाजे ध्यान किये ॥ मुकुट सीसपर शुभ्र शोभ तर, फटिक माल कर सुभग लिये ॥ ॥ ३ ॥ बलवंत विनय अस प्रभु उज्ज्वल यश, गावत जग निशिदिवस रहौं ॥ करुणा कीजै अस बर दीजै, हरि रस भीजै गीत कहौं ॥ ४ ॥

पद ३.

जै प्रभु चैतन चंद, जै जै नित्यानंद ॥ धृ० ॥ काम कल्प तरु दया वारि निधि, भक्ति दानि सुखकंद ॥ १ ॥ प्रेमपंथ जिन अवनि प्रचारो, हरे सकल दुख द्वंद ॥ २ ॥ नाम प्रताप प्रबल प्रगटाई, काटे साधन फंद ॥ ३ ॥ जबते प्रगट भये करुणाकर, किये द्वार जम बंद ॥ ४ ॥ जिहिं प्रभाव बलवंत बदतभे, जड चैतन नँदनंद ॥ ५ ॥

पद ४.

जै जै गौरांग उदारा ॥ बंदौं पद बारं बारा ॥ धृ० ॥ शचि सुवन अजब छबि धारी ॥ क्या मोहिनि मूरति प्यारी ॥ चरणोंपै तन मन वारा ॥ बंदौं० ॥ १ ॥ गौरेन्दु वदन द्युति न्यारी ॥ उपमा शोधत मतिहारी ॥ वह रूप अनूपम न्यारा ॥ बंदौं० ॥ २ ॥ लोचन भ्रूभाल विशाला ॥ कर दंड कमंडलु माला ॥ वैराग्य भक्ति वपु धारा ॥ बंदौं० ॥ ३ ॥ श्रीकृष्ण नाम मुख राजे ॥ मोहिनि मूरति उर भ्राजे ॥ झूमत आवे मतवारा ॥ बंदौं० ॥ ४ ॥ प्रभु पतित पाल करुणाकर ॥ महिमंडल धर्म दिवाकर ॥ जीवो-द्धारन वृतधारा ॥ बंदौं० ॥ ५ ॥ नहिं शरणागत कोइ छोडा ॥ भव बंधन सबका तोडा ॥ कर दिया बन्द जम द्वारा ॥ बंदौं० ॥ ६ ॥ जो गौड देश बंगाला ॥ जहँ मोहनि मंत्र उजाला ॥ उसका परचारन वारा ॥ बंदौं० ॥ ७ ॥ जिस ओर दृष्टि प्रभु डारी ॥ नर नारी सुरत विसारी ॥ श्रीकृष्ण नाम उच्चारा ॥ बंदौं० ॥ ८ ॥ जिन स्पर्श किया चरणोंका ॥ मिटगया द्वंद दुख धोका ॥ पाया रस भक्ति अपारा ॥ बंदौं० ॥ ९ ॥ गुरु देव दया अब कीजे ॥ अस भक्तिदान मोहिं दीजै ॥ लख चकित होय जग सारा ॥ बंदौं० ॥ १० ॥

तुम प्रमुख पूर्वज सांई ॥ क्षमिये अपराध गुसांई ॥ मैं मूरख बाल तुम्हारा ॥ बंदों ॥ ११ ॥ नहिं कुपुत्रको पितु माता ॥ तज देतेहैं सुखदाता ॥ वैसा है हाल हमारा ॥ बंदों ॥ १२ ॥ करनीकर यदि कुछपाया ॥ तन मनको नित्य तपाया ॥ फिर क्या अवलंब तुम्हारा ॥ बंदों ॥ १३ ॥ नहीं किया न कुछ करताहूं ॥ दिन रात पडा सोताहूं ॥ तुमपै है भरोसा सारा ॥ बंदों० ॥ १४ ॥ गुरुजनकी बडी कमाई ॥ बलवंत मुफ्तमें पाई ॥ क्या अद्‌भुत भाग्य हमारा ॥ बंदों ॥ १५ ॥

पद ५.

जग मोहन मन मोहन मोहनि, अखिल विश्व जो भरै ॥ मोद मंगल दासन कहँ करै ॥ परा शक्ति अव्यक्ति चराचरके अंतर संचरै ॥ बुद्धि तमतोम तरणि सम हरै ॥ १ ॥ भक्त जननकी जीवनि सोई दयाभाव उर धरै ॥ दुःख दारुण दासनके हरै ॥ २ ॥ बार बार बलवंत विनय करि सीस कमलपद धरै ॥ मात रसनासों सुधारस झरै ॥ ३ ॥

पद ६.

जैजै वृषभानुसुता, भक्त त्रातु मातु तुहीं, त्रिभुवनविख्यात जक्त, पापतापहारी ॥ धृ० ॥ धेनुद्विजन दुःखहरण, अखिल विश्व श्रेयकरण, तरुणतरणितेजवरण, किरण बर पसारी ॥ १ ॥ ब्रह्मादिक वंद्य चरण, सकल विश्व पोषकरनि, हरनि अघ अनंत संत, मुनि वरन विचारी ॥ २ ॥ मांगत बलवंतराव, कृष्ण कमलचरण चाव, बाढै नव नित प्रभाव, कीर्ति कुवँरि प्यारी ॥ ३ ॥

पद ७.

वंदे नंदकुमारं, श्रुतिसारम् ॥ धृ० ॥ नवनीरदसरसद्युति सुन्दरवरपीताम्बरधारम्॥ मत्तमयूरपिच्छमुकुटच्छाबिपरिरंभि

तकचभारम् ॥ १ ॥ चंचल लोचन युगलांचलजितपंचबाणशर जालम् ॥ मृदुल कपोल चलन्मणिकुण्डल कुंकुमरंजित- भालम् ॥ २ ॥ परम कृपालु मनोहर मंगल सकलकलैक- निधानं ॥ श्रीराधाभिदनिजसर्वस्वं वामांके विदधानम् ॥ ३ ॥ मुरलीमंजुलरवतरलीकृतगोपवधूनिकुरंबम् ॥ अमित प्रेमरस- वर्ष हर्षभरपुलकितभक्तकदंबम् ॥ ४ ॥ मुनिमानसचातकसं- तर्पण चारु चरित्रमपारम् ॥ शरणागतकरुणावरुणालयमग- णितगुणैरुदारम् ॥ ५ ॥ मामपि दिव्यनित्यदंपतिपदसे- वाधृताभिलाषम् ॥ दैन्यमात्रबलवंतमेकदा पश्य दृशा निजदासम् ॥ ६ ॥

पद ८.

जागो मोहन श्याम, जागो माधव हे सुखधाम ॥ १ ॥ जागो कृष्ण दनुजदलघालक, जागो धर्मविरदप्रतिपा- लक ॥ २ ॥ जागो बाल पूतनाहारी, जागो सकटासुरसं- हारी ॥ ३ ॥ जागो देव तृणासुरत्रासक, जागो गुपाल बकासुरनाशक ॥ ४ ॥ जागो केशव केशिनिकंदन, जागु गुविंद अघासुरखंडन ॥ ५ ॥ जागो चाणुरखलबलगंजन, जागो कंसअसुरमदभंजन ॥ ६ ॥ धर्मको नाश होत गिर- धारी, आवो बेगि सुदर्शनधारी ॥ ७ ॥ धर्मके एक तुम्हीं रखवारे, कर विनती बलवंत पुकारे ॥ ८ ॥

अष्टपदी ९.

जय जय जय जगदीश हरे ॥ धृ० ॥ हे जगवंदन कंसनिकंदन, दुखदलगंजन मोद करे ॥ १ ॥ धर्म उधारक संतनपालक, भवभयहारक विश्वभरे ॥ २ ॥ सुमिरत जान अजान नाम तव, संकट कठिन कलेश टरे ॥ ३ ॥ सुनहु विनय बलवंत दासकर, कहत नाथपद सीस धरे ॥ ४ ॥

यह कराल कलिकालजालमें, धर्म धेनु द्विज आनि परे ॥५॥ तुम्हरी ओर निहारि कृपानिधि, व्याकुल विलपत हैं स-गरे ॥ ६ ॥ धर्महेतु नरदेह धारि हरि, जुग जुग प्रति सब कष्ट हरे ॥ ७ ॥ अति विकराल काल जग छायो प्रगटौ प्रभु कर चक्र धरे ॥ ८ ॥

अष्टपदी १०.

द्रवहु दयानिधि यदुराई ॥ दनुजदलन खलमलन कलुष कुलदहन धर्महित चितलाई ॥ धृ० ॥ कलिमलजल-धिकलोल अमंगल प्रबलबढी बहु दुखदाई ॥ १ ॥ शुचि श्रुतिसेतु ससंकित कंपित व्यथित संतगण अकुलाई ॥ २ ॥ सुरकुलमंडन असुरनिखंडन, पाखंडिन दंडनराई ॥ ३ ॥ तव कीरति जगतारक तरणी, भवसरितातट लरखाई ॥ ४ ॥ लोभसुरामदअंध मंद जन, नहीं नीतपथ दिखराई ॥ ५ ॥ दारिद दलित दशादेशनकी, धराधान्य नहिं उपजाई ॥ ६ ॥ बिन जीवन जिमि मीन दीन तस, हीन दशा जन समुदाई ॥ ॥७॥ हे अनंत भगवंत करो बलवंत कृपा जग सुखदाई ॥८॥

अष्टपदी ११.

सुनिये दीनदयाल धर्मप्रतिपाल, धर्महित तनु धारी ॥ ॥ १ ॥ संकट विकट कठोर घोर चहुँ ओर परो अब गिर-धारी ॥ २ ॥ धर्म दिवाकर बदन दुरायो, छाई दश दिशि अँधियारी ॥ ३ ॥ श्रीगोपाल गोपकुलमंडन धर्म धेनु कहँ उद्धारी ॥ ४ ॥ अज्ञान कंटकबन घन बाढ़ौ, सत पथ दुरे मोक्षकारी ॥ ५ ॥ अनाचारआचारविचारन, करे न कोऊ मतिधारी ॥ ६ ॥ श्रुति पुराण इतिहास विनासे, लुप्त भये आश्रम चारी ॥ ७ ॥ काल मान बलवंत विलोकत, रहे संतजन हियहारी ॥ ८ ॥

अष्टपदी १२.

हे श्री माधव धाउ मुरारी, कंसारी संकटहारी ॥ धृ० ॥ महत तिमिर किल्बिष घन छायो, दुरी शास्त्रशशि उजियारी ॥ १ ॥ चतुर्वरण वर धर्म विनासे, भयो वर्णसंकर भारी ॥ २ ॥ सबके अंग अनंग प्रचारो, भये नारि नर व्यभिचारी ॥ ३ ॥ लुप्त भये सब धर्म सनातन, कुलमर्याद मिटी सारी ॥ ४ ॥ जिन जनपर आधार धर्मको, तिनहिं अधर्मध्वजा धारी ॥ ५ ॥ लागी बाड खेतको खावन, कौन करै फिर रखवारी ॥ ६ ॥ देखि विलक्षण गती कालकी, सुमती रहे मौन धारी ॥ ७ ॥ बाट तकत बलवंत एकटक, होत अबेर गदाधारी ॥ ८ ॥

अष्टपदी १३.

श्रीहरि परमकृपाला, मंगलमूल अमंगलनासन अखिलविश्वप्रतिपाला ॥ धृ० ॥ स्तुति शुचि सरस सरूप सुखद अति, विदितविश्व तिहुं काला ॥ १ ॥ अविरल अमल सरल गुणगाथा, गावत संत रसाला ॥ अघवनदहनकृशानु धर्म कर, भानु ईश अविनाशी ॥ ३ ॥ प्रणतपाल प्रणपाल कृपानिधि, सकलकलाबलरासी ॥ ४ ॥ सच्चितघन आनंदकंद, वृजचंद करौ मत हांसी ॥५॥ कह कौतुक निरखतहौ लागत, धर्मधेनु गलफांसी ॥ ६ ॥ सतसंगति जो मूरि सजीवनि, सहितमूल सो नासी ॥ ७ ॥ कहत विनय बलवंत जोर कर, कृपा करो अविनासी ॥ ८ ॥

अष्टपदी १४.

कलिमलमूल कठिन जारौ, दीनबंधु दुखदुरितविदारन धर्महेतु हरि अवतारौ ॥ धृ० ॥ कलित ललित अति मृदुल

मीनवपु, कृत चरित्र अद्भुत भारौ ॥ श्रुतिनिधि मणिगुण ज्ञान अलौकिक, प्रलय उदधि मधि उद्धारौ ॥ १ ॥ कमठ-कठिनपृष्ठोपर सुंदर, मंदरगिरि हरि परिचारौ ॥ रत्न चतुर्दश कर्ष हर्षयुत, विबुधसमाज काजसारौ ॥ २ ॥ करिवरवेश वराह भयावन, शृंगनि भार धरा धारौ ॥ भूरि भयंकर नर-हरि तनुधरि, नखन उदर दानव फारौ ॥ ३ ॥ वामन विमल विप्र बनि श्रीपति, बलि छलि सुरसंकट टारौ ॥ बार त्रिसत निक्षत्रि महीकरि, सूर समूह गर्व गारौ ॥ ४ ॥ रघुकुलमंडलमंडन धृत वपु, कृत खंडन खल दलसारौ ॥ एकवचन इकबाण वामइक, दुरधर दशकंधर मारौ ॥५॥ उदये यदुकुल कमलकलानिधि, प्रेमपंथ प्रभु संचारौ ॥ खलदल खंडि धर्ममंडन करि, कंस कुटिल भट संघारौ ॥ ६ ॥ परम दयालु विशुद्ध बौद्ध वपु, करि स्वीकृत जस विस्तारौ ॥ कल्कि कलेवर धारि सकल, भूभार टारि सब जग तारौ॥७॥ धर्महानि लखि देह धरौं दुखहरौं यह श्री मुख उच्चारौ ॥ सो बलवंत वचन करि पूरण, धर्मधेनु दुख निरवारौ ॥ ८ ॥

अष्टपदी १९.

श्रीराधे पदपंकज सिरधरि विनय विनीत सुनाऊं ॥ धृ० ॥ दास दौर देवी तुमहीं लौं, और कहां अब जाऊं ॥ १ ॥ जो कछु धर्म रु देशदशा भइ, तुम जानत कह गाऊं ॥ २ ॥ होय भाग्य बस जो कछु जगमें, सो दुख चित नहिं लाऊं ॥ ॥ ३ ॥ पै न भलो लागे लोगन यह, पुनि पुनि कहत लजाऊं ॥ ४ ॥ दीनदशा अस हाय होय जहँ, तुम रानी वे राऊं ॥ ५ ॥ जो जन विपति न कहहु स्वामि सों, तौ अब अंत न ठाऊं ॥ ६ ॥ सब संतनकी इती विनंती, काहि पद सीस नवाऊं ॥ ७ ॥ करौ कृपा बलवंत स्वामिनी, यह अभिमत फल पाऊं ॥ ८ ॥

अष्टपदी १६.

हे हरि अवढर दानी ॥ धृ० ॥ देव दयाकर भयहर शुभकर सब उर अंतरज्ञानी ॥ १ ॥ सत्य होय यदि मम अभिलाषा, तौ करुणा उर आनी ॥ २ ॥ कृष्ण कृपाघन पूरण कीजै, आतुरता पहिचानी ॥ ३ ॥ दुःसह भयो स्वदेशधर्म दुख, अब नहिं जाय बखानी ॥ ४ ॥ ज्यों शिशु क्षुधित मात मग जोवै, सांझ समय जिय जानी ॥ ५ ॥ तस अब नाथ तकत तव मारग, संत ऋषी मुनि ज्ञानी ॥ ६ ॥ विमल नलिन लोचन दुख मोचन, त्रिभुवन पति बल खानी ॥ ७ ॥ अब बलवंत विलंब न कीजै, होत धर्म जग हानी ॥ ८ ॥

पद १७.

यहि हित आयों शरण तुम्हारी ॥ धृ० ॥ विन मध्यस्थ स्वामिनी तुम्हरे, सुनि है कौन हमारी ॥ जहं निसदिवस नौबतें बाजें, तूती कहा विचारी ॥ १ ॥ अति कोमल चित परम कृपाला, श्रीवृषभानुकुमारी ॥ कोउ बिधि विनय स्वामिसों हमरी, कहिये राजदुलारी ॥ २ ॥ नहिं आधार धरा संतनको, छई दिसन दश अंधियारी ॥ अब बलवंत विलंब न कीजै, द्वारे कहत पुकारी ॥ ३ ॥

पद १८.

कबलों रहौ योगनिद्रामें, जागो धर्मध्वजाधारी ॥ धृ० ॥ करत पुकार सन्तमंडल सब, बार बार पद सिरधारी ॥ १ ॥ शंभु स्वयंभु स्वभू मुनि गणवर, कहत धर्म हित चितधारी ॥ ॥ २ ॥ अबकी बेर अबेर भई, बलवंत मौन धारौ भारी ॥ ३ ॥

पद १९.

कैसे ठाडेहो धारि मौन गोपाला ॥ विन कहे बनै नहिं काज आज नँदलाला ॥ धृ० ॥ है नाम तुम्हारा धर्मपाल श्रुति-

लेखो ॥ क्या हुई धर्मकी दशा जरातो देखो ॥ द्विज धेनु संत जन विकल रहत दिनराती ॥ लखि देशदशा अरु धर्म धडकती छाती ॥ आया है धर्मपर संकट कठिन कराला ॥ ॥ १ ॥ त्यागो अब मोहन मौन काम है भारौ ॥ डूबत नय्या मझधार धर्मकी तारौ ॥ धरि जुग जुगमें अवतार धर्म उद्धारौ ॥ दुष्टनको करि संहार भार भू टारौ ॥ कसि फेंट गरुड तजि धावहु दीनदयाला ॥ २ ॥ आ पडी धर्मपै चोट बडी अटपटकी ॥ सटकी सबकी मति लखिगति, समय विकट-की ॥ सब रहे देखते लोग, सके नहिं हटकी ॥ घटगे सब पुण्य प्रताप, आपसों अटकी ॥ भइ प्रगट नाथ अब जग, अधर्मकी ज्वाला ॥ ३ ॥ भटकी सब जगहों तुम जानत, घट घटकी ॥ रख लीजो लाज महराज, धर्म संकटकी ॥ प्रणपू-रण अपनो करौ, सघन जिय खटकी ॥ बलवन्त शरण अब लीन्ही, नागर नटकी ॥ अब धर्म धेनु आ फँसी, भयंकर जाला ॥ ४ ॥

पद २०.

हे प्रभु परम सुजान कान्ह भगवान कृपा गुणखानी ॥धृ०॥
तुमसों कहा दुराव दयानिधि, अन्तरगतिविज्ञानी ॥ १ ॥
नहिं धनधरनीधामकामना, प्रभुताबल जग जानी ॥ २ ॥
केवल धराधर्मवृद्धीहित, हिय अभिलाष समानी ॥ ३ ॥
सो बलवंत आस अब पूरण, करिये अवढर दानी ॥ ४ ॥

पद २१.

हरे कृष्ण जय राम कृष्ण, भज पुरुषोत्तम नरसिंह हरी ॥ ॥ धृ० ॥ मोर मुकुट पीताम्बर सोहै, मुरलि मनोहर अधर धरी ॥ १ ॥ प्रणतपाल भक्तनके हित हरि, लीला जगमें विविध करी ॥ २ ॥ व्याध गीध गज आदि उधारे, गणिका

सुमिरत नाम तरी ॥ ३ ॥ भये सुचित बलवन्त नाथके, चरणकमलपै सीस धरी ॥ ४ ॥

पद २२.

जय जय केशव जय नारायण, जय माधव गोविंद हरी ॥ ॥ धृ० ॥ देवकिनंदन दनुजनिकंदन, त्रिभुवनवंदन कुशलकरी ॥ १ ॥ गोपिनरंजन खलमदगंजन, भयभ्रमभंजन मोदकरी ॥ २ ॥ सब जगनायक सब सुखदायक भवबाधा बलवंत हरी ॥ ३ ॥

पद २३.

हरे राम हरे राम हरे राम हरे, भज मन निस दिन प्यारे ॥ धृ० ॥ नाम लेत मंगल दस दिसहूं, पापसमूह हरे ॥ ॥ १ ॥ सुमिरत जान अजान जाहि जन, संकट कठिन टरे॥ ॥ २ ॥ सुख अनंत बलवंत ऊपजे, चातक रटन धरे ॥ ३ ॥

पद २४.

हरये नमः हरये नमः हरये नमः कृष्ण यादवाय नमः ॥ ॥ धृ० ॥ गोपाल, गोविन्द, श्रीराम, मधुसूदन ॥ १ ॥ वृजपाल, जनपाल, नतपाल, जगवंदन ॥ २ ॥ नंदलाल, सुरपाल, प्रणपाल, खल गंजन ॥ ३ ॥ श्रीराम सुखधाम, घनश्याम, मन मोहन ॥ ४ ॥

पद २५.

भजु मन गोविंद गोविंद श्री गोपाल ॥ धृ० ॥ वासुदेव दामोदर माधव श्रीमुकुंद नंदलाल ॥ १ ॥ वदन इंदु कंदर्प दर्प दलि मृगमद चरचित भाल ॥ २ ॥ सीस मुकुट कर लकुट भेष नट, अधरन वेणु रसाल ॥ ३ ॥ कटि तटि पीत पाट पट सुंदर, उर बिशाल बनमाल ॥ ४ ॥ वाम भाग वृष-

भानु नन्दिनी रूप रासि जनपाल ॥ ५ ॥ सुरभि समूह गोप गोपीगण लिये संग बृजबाल ॥ ६ ॥ छबि अनूप बलवंत विलोकत अँखियां भई निहाल ॥ ७ ॥

पद २६.

गोपाल कहो, गोबिंद कहो, नंदलाल कहो, जगपाल कहो, अखंड आँनद सुःख लहो ॥ धृ० ॥ श्रीगोपीनाथ गदाधर गोवर्द्धन धारी ॥ मन मोहन मदन गोपाल श्याम जनसुखकारी ॥ जो मुक्ति चहो, कृष्ण कृष्ण दिन रैन कहो ॥ १ ॥ घनश्याम सदा सुखधाम ब्रह्म बृज बन चारी ॥ केशव हरि कमलाकांत राधाबर बनवारी ॥ बलवंत भजो हरि परमानंद निमग्न रहो ॥ २ ॥

पद २७.

जै कृष्ण कृष्ण गोपाला, गोवर्धन धर नँदलाला ॥ धृ० ॥ गोविन्द मुकुन्द मुरारी, बनवारी कुंजविहारी ॥ मनमोहन बंसीवाला, जै कृष्ण कृष्ण गोपाला ॥ १ ॥ माधव मोहन घनश्यामा मुनिजन मानस विश्रामा ॥ करुणाकर दीन-दयाला जै कृष्ण० ॥ २ ॥ सच्चित आनंद गुणग्रामा, संकर्षण हरि सुख धामा ॥ परमेश्वर परमकृपाला, जै कृष्ण० ॥ ३ ॥ यदुवंस बनज वन भानू, खल कानन दहन कृशानू ॥ श्रुति धर्म शत्रु उर शाला, जै कृष्ण० ॥ ४ ॥ राधे मुख चन्द्रचकोरा, श्रीगोपीजन चितचोरा ॥ राधे भव सरसि मराला जै कृष्ण० ॥ ५ ॥ राधेवर रासविलासी, बृजचंद्र द्वारकावासी ॥ जगदीश जक्त प्रतिपाला, जै कृष्ण ॥ ६ ॥ कर लकुट मुकुट सिर धारी, कांधे बर कामरि कारी ॥ संग सुरभिवृंद बृजबाला, जै कृष्ण० ॥ ७ ॥ कटि तर पीता-म्बर भ्राजै, मणि कौस्तुभ कंठ विराजै ॥ क्या अनुपम रूप

निराला, जै कृष्ण० ॥ ८ ॥ खग गज गणिका उद्धारी, दीनोद्धारन वृत धारी ॥ तिहुं लोक सुयश उजियाला, जै कृष्ण० ॥ ९ ॥ भवसिन्धु भयंकर भारी, बिन श्रम उतरैं नर नारी ॥ चढि नाम नाव तत्काला, जै कृष्ण० ॥ १० ॥ पीपी के रूप रस प्याला, बलवंत हुआ मतवाला ॥ गावत गोविन्द गुण माला, जै कृष्ण० ॥ ११ ॥

पद २८.

जिन कृष्णका नाम सनेह लिया, तिन साधन और किया न किया ॥ धृ० ॥ जिन पिया सदा सुरसरित नीर, तिन कूप का नीर पिया न पिया ॥ १ ॥ जिन ने प्रभु भक्ति धरी न हिये, सो नर तनु धारि जिया न जिया ॥ २ ॥ जिनके उर मांझ दया न बसी, तिन दान अनेक दिया न दिया ॥ ३ ॥ बलवंत भये प्रभु के जन जे, तिन और का शरण लिया न लिया ॥ ४ ॥

पद २९.

श्रीकृष्णचंद्र कृपालु स्मर नित, घोर भवभयभंजनम् ॥धृ०॥ मुखइंदु मृगमद बिंदु गुण, गणसिंधु राजिवलोचनम् ॥ वर मुकुट मस्तक पीत पट कटि, तड़ितद्युति मदमोचनम् ॥ १ ॥ वामांग विलसत शक्ति सुख, सौभाग्यप्रद जगजीवनम् ॥ द्युति देह दंपति जोति प्रजुलित, कोटि स्मरमदमर्दनम् ॥२॥ पदकंज सब सुखपुंज मुनि मन, मधुप निस दिन गुंजनम् ॥ बलवंत हृदय निवास कृत श्रम, भूरि भवभयभंजनम् ॥ ३ ॥

पद ३०.

भजो मन निस दिन राधे श्याम, सच्चित घन सुख-धाम ॥ धृ० ॥ अभिमतफल बरदायक सबको, मुनिजन

मनविश्राम ॥ १ ॥ कृतआदिकमें तप मख पूजन, कलियुग तारक नाम ॥ २ ॥ धन्यधन्य बलवंत जगतजन, रटैं जे आठहु जाम ॥ ३ ॥

पद ३१.

हमारो जीवन दंपति पायँ ॥ धृ० ॥ बिछुरत विकल होत जिय भारी, सुख होवत उर आयँ ॥ १ ॥ पादपद्म मधु चिन्मय निस दिन, चाखत नाहिं अघायँ ॥ २ ॥ मगन रहत बलवन्त निरखि छबि, बार बार बलि जायँ ॥ ३ ॥

पद ३२.

राजत श्याम राधिका जोरी ॥ धृ० ॥ नवल छबी अद्भुत त्रिभुवनते, लखि दृग सफल करो री ॥ १ ॥ नीरद नील स्वामि द्युति सोहत, निपट स्वामिनी गोरी ॥ २ ॥ दंपति जस बलवन्त बखानत, बार बार कर जोरी ॥ ३ ॥

पद ३३.

श्रीराधा माधव पद पंकज, भज मन त्यज जग दुखदाई ॥ ॥ धृ० ॥ तिहिं पराग मकरन्द अनूपम, भवके भ्रमरन नाहिं पाई ॥ १ ॥ जाने कहा पंक को कीटक, चिन्मकरंद मधुरताई ॥ २ ॥ जब लग रहै न मन जग बाहिर, आनन्द स्वाद न दरसाई ॥ ३ ॥ लागो रहै चरण चित जब लग, जग की सुधि न सकत आई ॥ ज्ञान तत्त्व बलवंत यही है, किये प्रतीत होय भाई ॥ ४ ॥

पद ३४.

अति सुन्दर मनमोहनि मूरति, आज श्यामछबि भली ॥ धृ० ॥ रूपसिंधुकरुणामय स्वामी, तीन लोकके एक धनी ॥ ॥ १ ॥ कुटिल लटा लटकें मुख ऊपर, भवें कमानसमान

तनी ॥ २ ॥ भाल बिशाल कमलदल लोचन, तापर कजरा रेख अनी ॥ ३ ॥ अब बलवन्त विमल प्रभुके यश, वरणत बानी प्रेम सनी ॥ ४ ॥

पद ३५.

बांकी छबि बांके बैन, अदा बांकी प्यारी ॥ बलिहारी श्याम कोटि, काम नखपै वारी ॥ धृ० ॥ बांकी मुख लटकें लटा, मुकुट छबि मनहारी ॥ १ ॥ बांकी बर बेणु रसाल, अधर बरपै धारी ॥ २ ॥ बलवंत सदा यह बांकी, छबिपै बलिहारी ॥ ३ ॥

पद ३६.

क्या बनी मनोहर छबी आज बनवारी ॥ तिहुँ पुर सों सुंदर परी अमल उजियारी ॥ धृ० ॥ शिर लसत जटित मुकुट लकुट कर धारी ॥ श्रुति कुंडल मणिमय लोल कपोल बिहारी ॥ १ ॥ कच कुंचित रति पति जनु गुहि फंदे डारे ॥ जिहिं मधि विहंगमन उरझि न सुरझन हारे ॥ २ ॥ बर बिथुरी अलक रसाल लटें घुंघरारी ॥ आनन मयंक बिन अंक द्युति न्यारी ॥ ३ ॥ सुठि सघन बंक भ्रकुटी विशाल अनियारी ॥ युग मध्य विमल तिलबिंदु मदन मन हारी ॥ ॥ ४ ॥ नवरसके सागर नैनन माँझ दुराये ॥ पलकन पट सों कछु दुरे कछुक दरसाये ॥ ५ ॥ नासिका सरल सुंदरतासीम दिखाई ॥ जहं विहरत निसदिन विश्व प्राण हरषाई ॥ ६ ॥ द्युतिदशन लसन मुक्तापंक्ती छबि छीनी ॥ तन पै यौवनको भार मसें कछु भीनी ॥ ७ ॥ रद पुट संपुट मधि शोभा सकल दुरानी ॥ मुसक्यान माधुरी द्वार कछुक दरसानी ॥ ८ ॥ गुहि सुंदरताकी गेंद चिबुक शुचि खानी ॥ जहं तिल छल बैठा मार मती सकुचानी ॥ ९ ॥ कल कंठ महा छबि भवन

मनोहर राजे ॥ बनमाल गरे उर श्री बत्सांक विराजे ॥१०॥ सोहत शुचि नाभि गम्भीर मनहु मन्मथ सर ॥ लिपटो पट पाट सुपीतकेहरिकटि सुंदर ॥ ११ ॥ कर चरण चारु शोभा रश्मी प्रगटानी ॥ लावण्य दिवाकर उदित भयो जग जानी ॥ १३ ॥ बलवन्त जहां सब उपमालागत झूंटी ॥ सोइ रूपसांवरो है टूटी की बूंटी ॥ १३ ॥

पद ३७.

अति प्यारी मोहिं लागे राम, मूरत श्री गिरधारी ॥ धृ० ॥ मोर मुकुट सिर लकुट ललितकर, धुनि वेणू सुखकारी ॥ भ्रकुटी कुटिल कटीले लोचन, नासा शुक छबिहारी ॥ १ ॥ दशन पंक्ति मुक्तावलि सुंदर, अधर छटा अरुणारी ॥ चिबुक चारु मन्मथ मद मर्दन, कंठ कम्बु द्युति भारी ॥ २ ॥ उर विशाल वनमाल विराजे, कांधे कामरि कारी ॥ कटि पट पीत हरत द्युति दामिनि, कोरट की जरतारी ॥ ३ ॥ गो गोपाल बाल संग सोहैं, वृंदा विपिन बिहारी ॥ निरखत छबि बलवंत मगन मन, बार २ बलिहारी ॥ ४ ॥

पद ३८.

परम माधुरी हरी मूरति, तू देखी री ॥ धृ० ॥ सुंदर तनु आभा घनश्याम, शरद इंदु मुख सब सुख धाम ॥ लोचन कंज चारु अभिराम, मेरो मन विश्राम श्याम, तू देखी री ॥ १ ॥ मौक्तिक नासा अग्र सुहाय, अधर बिम्ब फल छबि दरसाय ॥ पीत पाट पट कटि मन भाय, बनसी विपिन बजाय गाय, तू देखी री ॥ २ ॥ सकल कला विद्या गुण खान, नेह निबाहक सूर सुजान ॥ रसिक शिरोमणि रूप निधान बलवंत जीवन प्राण कान्ह, तू देखी री ॥ ३ ॥

पद ३९.

बे चैन हुआ दिल भूली मति गति मेरी ॥ जब से देखीहै झलक सांवरे तेरी ॥ धृ० ॥ वह चांदसा मुखडा खिले कमलसे लोचन ॥ दुखद्वंद निवारण पूर्ण प्रीति रस पोषण ॥ १ ॥ नासिका अग्र लोलक अनमोल सुहावे ॥ दिल देखि मदनका सौ सौ झोके खावे ॥ २ ॥ कटि सोहे पीत पट जनु दामिनि उजियारी ॥ हीरा कर धोनी लटक रही मन हारी ॥ ३ ॥ बलवंत प्रीति की छटा है सब से न्यारी ॥ सूरत पर तेरे बार बार बलिहारी ॥ ४ ॥

पद ४०.

रे मन मानु विहारि वृन्दावन ॥ धृ० ॥ सर्व काल सौभाग्य सुखद लखि, लोगन लघु लागत बासव बन ॥ १ ॥ धरणि धन्य गिर धर पद चिह्नित, तहं सुरभीं नित चरन हरित तृन ॥ २ ॥ बलिन बेलि कुसुमित तरु पुंजन, कुंजन मंजुल माल कदंबन ॥ ३ ॥ कूल कलिंदनंदिनीके बर, पुलिन पवन बहि सनित सुगन्धन ॥ ४ ॥ परम पुरुष बलवंत निरन्तर, करत केलि जहं धारि मनुज तन ॥ ५ ॥

पद ४१.

क्या मोर मुकट मुरली वाले की छबि है ॥ जो चाहे देख लो इस मूरत में सब है ॥ १ ॥ नरपर तो साढे तीन हाथ का कद है ॥ देखा तो भुवन समूह भरा बेहद है ॥ २ ॥ सुरगुण निर्गुण दोनों की साफ झलक है ॥ लखतेहैं इसी को औ फिर यह ही अलख है ॥ ३ ॥ माता को मुख में विश्व देखि अचरज है ॥ वही बाल बंधा ऊखल से खिलाडी धज है ॥ ४ ॥ नैनों में गोपियोंके वही बसा मदन है ॥ वही कंस कुटिल

को दरसा काल कठिन है ॥ ५ ॥ यह चिदानंद ज्ञानी के चिंतन में है ॥ जो परम लोक बाशी आशिकको क्या इन झगडोंसे मतलब है ॥ ६ ॥ बलवंत तुम्हें यह सूरत भाई बस है ॥ ७ ॥

पद ४२.

जो भजन भक्ति की रीति संत जन गाई, मैं निज मति के अनुसार कहों समुझाई ॥ धृ० ॥ सीधी है बात पर नहीं समझमें आवे, बिन शुद्ध हुये मन नहीं तत्व को पावे ॥ १ ॥ रज तम को घटादे सतगुण हिये बढाकर ॥ एकांत बैठि निशि दिन हरिनाम जपाकर ॥ २ ॥ सतगुण है चित का शोधक जैसे दिवाकर ॥ कफ, वात, वैद्य ज्यों घटाय पित्त बढा-कर ॥ ३ ॥ ज्वर दोष घटे बिन स्वाद अन्न नहिं आवे ॥ बिन शुद्ध हुये मन नहीं भजन सुख पावे ॥ ४ ॥ बिन समय-परे के नहीं बीज जमताहै ॥ निःशांति इकांत में भजन खूब बनताहै ॥ ५ ॥ है कृपादेश करनी का क्या चलता है ॥ स्वामिनी कृपासे रंक राव होता है ॥ ६ ॥ नहिं कर्ज किसी का श्रीहरिपर आताहै ॥ है स्वतंत्र जिससे खुशहो उसे देता है ॥ ७ ॥ विश्वास प्रेम नहिं बाहर से आता है ॥ धोने से रातदिन मन का अब्र खुलता है ॥ ८ ॥ सुनते हैं रोज पर निश्चय नहिं आता है ॥ बलवंत इसीका बहुत बडा घाटा है ॥ ९ ॥

पद ४३.

भजन कुछ करले नरहरिका ॥ मजा फिर आवे नर तनुका॥ विना प्रताप भजनके तेरे, दिलमें बल नहिं आवे ॥ फाका फिकर रोग दुख डर सब, निस दिन तुझे सतावे ॥ १ ॥ जैसे सांप कांचुली तजिके, रूप रंग बतलावे ॥ तैसे जोबन

भऱ्यो दिव्य तनु, हरीभजन सों पावे ॥ २ ॥ फिकर काहे की डर है किसका, शंका मन नहिं आवे ॥ सदा मस्त साहबके रंगमें, जमको खडा डरावे ॥ ३ ॥ कुबेरके सर भूपति नरवर, और बडे अधिकारी॥तुझको ऐसे दीख पडेंगे, जैसे बडे भिखारी ॥ ४ ॥ चिंतानल से व्याकुल वे सब, चैन नहीं है छिन भर ॥ कोट कमाई करी हुवा क्या, जैसे जोडे पत्थर ॥ ५ ॥ जिसने हरिसेवा फल चाखा, उसको कुछ नहिं भावे ॥ भाग्यवंत बलवंत कोइ इक, जगमें यह सुख पावे ॥ ६ ॥

पद ४४.

प्रभुका भजन करो भाई, होय जिहिं मन की शुचि ताई ॥ धृ० ॥ वहां दया की नहीं कमी है, है सब तेरी गलती ॥ मनपै स्याही मनों चढी है, नहीं रती भर धुलती ॥ ॥ १ ॥ इसको धोकर साफ बनाना, यही काम है तेरा ॥ स्वस्वरूप बलवंत दिखे तब, मान बचन सत मेरा ॥ २ ॥

पद ४५.

भजन नहिं खेल तमाशा है ॥ कठिन फांसी से फांसा है ॥ ॥ धृ० ॥ सूली पर दुख पलभर का है, रन में दुःख घडीका ॥ विष खाये दुख चार घडीका, खडा मरे दुख छिनका ॥ यहां दिन रात काम दुखसे, नहीं मिलती है नींद सुखसे ॥ १ ॥ खडा रहै भाले की अनी पर, मन को नहीं डिगावे ॥ एक सुई के नाके में से, गज की फौज चलावे ॥ विकट इससे भी भजन प्रभुका, खेल नहीं घर है साहब का ॥ २ ॥ मन की भूरी मैल भरी है, छीलो रोज छुरीसे ॥ जब देखो तब मैली ही देखो, शोधो अब अग्नीसे ॥ नहीं है दुख यह दो दिनका ॥ काम है अनंत जन्मोंका ॥३॥ मन की लडाई बडी

बिकट है, सूर छोड रन भागे ॥ भाग्यवंत कोई लाल साईं-का, रुपै है इसके आगे ॥ जो लडते आये जन्मों से, लडेंगे वही यार मनसे ॥४॥ धन धरणी सुत दारा छोडें, छोडें आशा तन की ॥ सब से तोडें हरि से जोडें, यह रहनी संतनकी ॥ न कोरी बातों को मानें, रहै रहनी तो हम जानें ॥ ५ ॥ मंजिल दूर समय थोडा है, फिर कहिये क्या कीजै ॥ आंख मूंदके श्रीगोविंदके, धाय चरण गहि लीजै ॥ उसी दम होवे निस्तारा, यही बलवंत सार सारा ॥ ६ ॥

पद ४६.

हरिदास नहीं दुनियांकी चाह करतेहैं ॥ जिनके हैं हौ-सले बडे बलँद उडते हैं ॥ १ ॥ दिन रात लगे जो प्रभु सेवा करते हैं ॥ अंगुश्त दिखा सूरजको खडा करते हैं ॥ २ ॥ नहिं छोटी इच्छा बडे लोग करते हैं ॥ बंदेसे खुदा होने की चाह करते हैं ॥ ३ ॥ जे तन मन अपना मार खाक करते हैं ॥ जो रखे रंक सिर हाथ राव करते हैं ॥ ४ ॥ नुक्ते कि बात है जिसे बयां करते हैं ॥ बलवंत कामना सांच समझ करते हैं ॥ ५ ॥

पद ४७.

वाणीका छल बडा बिकट है भूले पण्डित ज्ञानी ॥ इसका सारा झगडा जगमें, डूबे [illegible] खों प्रानी ॥ १ ॥ स्वर्गऽरुनर्क लाभ हानी ॥ इसीसे हो [illegible] जानी ॥ बीमारी कायाको नासे, वाणी जीव िह न[illegible] महामरीसे रोग बिकट है, उडके लगे हवासे ॥ ब[illegible] सस प्रानी ॥ जहरकी फूंक दुष्ट वानी ॥ वेद पुरान [illegible]नीमें, इसने डाला चक्कर ॥ सीधा रस्ता भूल गये [illegible] फिरते टक्कर ॥ न बातोंके झगडे पडना ॥ सा[illegible]टना ॥ भाव कुभाव

अनख आलससें, कृष्ण नाम जो गावे ॥ पूंछा ताछी कहीं न होवे, सूधा स्वर्ग सिधावे ॥

पद ४८.

धन्य धन्य गुरु साहेब जिनकी, महिमा जग जानी ॥ हृदयकपाट खुले धरतेही, सीस वरद पानी ॥ धृ० ॥ खिला गगनमें बाग बिरंगी, शोभामन भाई ॥ छिटकि रही चंद्रिका मनोहर, चहुं दिस सुखदाई ॥ जगमगात जित उत मनु हीरा, कनकी समुदाई ॥ बरस रहे चहुं ओर गगनसे, उड गण सुखदानी ॥ १ ॥ शिव ब्रह्मा विष्णूके सुंदर, रूप अलख छाये ॥ सोम सूरके बिंदु दोउदग, खेलत दरसाये ॥ दीप-मालिका लगी गगनमें, देखत हरषाये ॥ दमक रही चहुं ओर दामिनी, सुंदर मन मानी ॥ २ ॥ नैनोंका यहि फल है देखो, आंखोंसे प्यारे ॥ चिदानंद भण्डार भरा है, खालीमें सारे ॥ जरा नजरके एर फेरमें, खुलें भुवन तारे ॥ क्यों प्रत्यक्ष छोडके हो तुम, बनते अनुमानी ॥ ३ ॥ जो साहब आँखों नहिं देखा, तो फिर क्या देखा ॥ जीते जी जो मिला नहीं तो, मरे कोन लेखा ॥ नगद पटावें सौदा यहं नहिं, उधारकी रेखा ॥ जिसका जी चाहे देखें, बलवंत यही ठानी ॥ ४ ॥

पद ४९.

पूर रहाहै घट घट साहब, पै तेरा क्या काम सरै ॥ सब लकड़ीमें आग भरी है, नेक नहीं तन शीत हरै ॥ धृ० ॥ बडे बडे भंडार धान्यके, भरे धरे यदि भवन तरै ॥ खावे जो न पकाके रोटी, कैसे तेरा पेट भरै ॥ १ ॥ गुप्त बात बलवन्त तत्वकी, गुरु बिन सो नहिं समझ परै ॥ बिना हरी हिये जागृत कीन्हें, नहीं कामना तरू फरै ॥ २ ॥

पद ८०.

सबमें भराहै साहब जिसने जाना जीवन सफल किया ॥ ॥ धृ० ॥ भवन गढा भंडार न जाना भीख मांगि अति कष्ट जिया ॥ १ ॥ परके धोकेमें मूरख परि, अखंड आनंद नसादिया ॥ २ ॥ परमानंद सुस्वाद सुधा तजि, विषय वारुणी कींच पिया ॥ ३ ॥ अब बलवंत दंपती पद बल, तीन भुवनको जीत लिया ॥ ४ ॥

पद ८१.

आपहि जल थल कमल आपही, केसर अरु मकरंद भरा ॥
रस विलासके हेत आपही, सुन्दर मधुकर रूपधरा ॥ १ ॥
अपने रसको आप चाखके, मगन हुआ बनबाग फिरा ॥
अपने सुखके हेत आपही, भोग्य भोगता स्वांग करा ॥ २ ॥
है स्वतंत्र अपने घर आपहि, नहिं दूजा कोइ दृष्टि परा ॥
शोधहु अब बलवंत कहां हौ, माया भ्रमपट दृगन टरा ॥ ३ ॥

पद ८२.

जो जीव भूलगया तुम्हें तो अचरज क्या है ॥ मायाका गले में पडा बिकट फंदा है ॥ १ ॥ यह पराधीन अज्ञानी तेरा बंदा है ॥ सर्वज्ञ आप सर्वेश्वर जग गाता है ॥ २ ॥ तुम को तो बिसरना नाथ नहीं फबता है ॥ बलवंत भूलना अपना तो बाना है ॥ ३ ॥

पद ८३.

खेल मायाका है भारी ॥ देखि भूले सुर नर नारी ॥ धृ० ॥ सब भेदोंका भेद बात सुन, नहिं वेदोंसे न्यारी ॥ काया यही बडी माया है, सोच समझ मति धारी ॥ १ ॥ यह संसार इंद्रियोंके बल, नजर तुझे आताहै ॥ तनमें तेरे भरी

है दुनियाँ, बाहरका धोका है ॥ २ ॥ जो दिखताहै झूंठा है सब, सच्चा नजर न आवे ॥ रवि निज छाया मांझि छिपा है, कौन खोजके लावे ॥ ३ ॥ चाल ॥ नैनोंकी पुतलीने सब रंग रचा है ॥ संसार इसीने गढके खडा किया है ॥ क्या अचल ठाट कानोंके परदोंका है ॥ दुनियांका सारा राग यहीं बजता है ॥ रस खान पान सब है रसनाके भीतर ॥ सर्दी गर्मीका बोध स्पर्शशक्ती पर ॥ हम हैं जहां वहीं दुनिया है, होय न हमसे न्यारी ॥ नाम होशका हुवा है आलम, कहि बलवंत विचारी ॥

पद ५४.

अभीतक आंख नहीं खुलती, रात दिन करते हो गलती ॥ धृ० ॥ प्रभुता औरोंको दे बैठे, फिर कैसा सुख सोना ॥ जोरू अपनी खसम बनाई, फिर काहेका रोना ॥ १ ॥ वासनाओंने तेरे मनकी, तुझपै करी सवारी ॥ अखंड पदसे गिरा दिया है, करके दीन भिखारी ॥ २ ॥ नोकर चाकर मालिक होगये, घरमें धूम मचाई ॥ तुझे पकड़के कैद किया है, जरा समझले भाई ॥ ३ ॥ (चाल) यह शरीर तेरा, यातू इसका चेरा ॥ तू मालिक मनका, या मनमालिक तेरा ॥ करि बलवंत विचार समझले, तुही स्वामि सुखरासी ॥ जो अपना अब सरूप भूले, परै फन्द चौरासी ॥ ४ ॥

पद ५५.

आंख अब खोल देखभाई ॥ यह कैसी गफलत चितछाई ॥ धृ० ॥ पल पल आयू घटती तेरी, तू बढती है जाने ॥ काल अमोल खेलमें खोते, गोते खाते स्याने ॥ १ ॥ छिनमें रोना छिनमें हँसना, है यह दशा तुम्हारी ॥ नहीं चैन चित को है पलभर, देखो जरा विचारी ॥ २ ॥ सगे

सनेही नहीं हैं तेरे, हैं मतलबके गरजी ॥ गाल फुलाके यह बैठेंगे, जब तोडोगे मरजी ॥ ३ ॥ दुख सुख अपने कर्मोंके बस, जीव यहां पाताहै ॥ और नहीं कोउ देता लेता, झूंठी सब बाता है ॥ ४ ॥ निशि दिन साहबकी कर सेवा, नास मती कर अपना ॥ खबरदार बलवंत रहो अब, है सब जग यह सपना ॥ ५ ॥

पद ५६.

यह बिषयवासना छोड अरे, क्यों द्वार द्वार फिरता मारा ॥ एक पेटके पीछे तूने, श्वान सरूप वृथा धारा ॥ चाह कोटिकी या कौडीकी, दोनों देख बराबरहैं ॥१॥ राव-रंक तृष्णाके मारे, व्याकुल दीन सरासर हैं ॥ जिसको इच्छा नहीं किसीकी, सबमें बडा वही नर है ॥२॥ इंद्र चंद्र क्या कुबेर कैसर, कौन करे उसकी सरहै ॥ तीन लोककी अचल सम्पदा, एक उसीके तौ घरहै ॥ नहिं इच्छा बलवंत रखी फिर, सच कहनेमें क्या डर है ॥ ३ ॥

पद ५७.

सीस श्री गुरुचरणन नाई ॥ ज्ञान गुणसार कहों भाई ॥ मथिके सब उपनिषद् पयोनिधि, गुरु नवनीत निकाला ॥ चाखतही रसना रस जाको, होय हिये उजियाला ॥ १ ॥ गुरुकी महिमा जग जानी, धन्य जिनके सिर वर पानी ॥ उसी सारका सार निकाला, जो कोइ भरके प्याला ॥ पीवेगा अभ्यासरूपसे, होय मुक्ति तत्काला ॥ २ ॥ बात यह गुप्त सत्य जानो ॥ मुक्तहो जीवन सुख मानो ॥ जीव-ईशका भेद न जबतक, पूरा मनमें लावे ॥ तबतक जीव अविद्या तजिके, नहीं मोक्षपद पावे ॥ ३ ॥ ब्रह्म मायाको अब जानो ॥ इन्हींका स्वरूप पहिचानो ॥ आदि शक्ति को

अंगिकार करि, जिसने जग विस्तारा ॥ सच्चित आँनद वही ब्रह्महै, निर्गुण अरु अविकारा ॥ ४ ॥ ज्ञान घन पूर रहा भाई ॥ सोइ जग दृष्टा श्रुति गाई ॥ चार देह अरु चार आत्मा, चार अवस्था सुंदर ॥ इनका जो साक्षी है सोई, पर ब्रह्म परमेश्वर ॥ ५ ॥ वही जग व्यापक आनंद रूप ॥ ज्ञान घन साखी अमल अनूप ॥ दो नैनों कर एकहि दरशन, एक शब्द दो कानन ॥ एक लक्ष कर दुई मिटादे, प्रगटे जोती ततछन ॥ ६ ॥ भेद जो मेटे बलिहारी ॥ लक्षकी बात बड़ी भारी ॥ औरत औरत एक सरीसी, क्या माता क्या नारी ॥ एक नजर के बल ने दोनों, करदीं न्यारी न्यारी ॥ ७ ॥ लक्षने द्वैत बनायाहै ॥ जगत को भ्रम में डालाहै ॥ माया क्याहै अब तुम इसको, खूब तरह पहिचानो ॥ बिन पहिचाने बचा न कोई, यही सत्य करि मानो ॥ ८ ॥ कलपना माया है भाई ॥ बात नुक्ते की बतलाई ॥ जो जो मनमें फुरें कल्पना, उसपर ध्यान लगाओ ॥ द्रष्टा होकर देखो उसके, चक्कर में मत आओ ॥ ९ ॥ परै जो इस की धारामें ॥ वही डूबै भव भारामें ॥ सुचित बैठ के हृदय कमल पर, देखो लक्ष लगा कर ॥ उठती मनकी मौज जहां है, वह क्याहैगा अंदर ॥ १० ॥ लखो चैतन्य चंद भारी, जगत में फैली उजियारी ॥ सावधान मन करके अपना, उसी जगह ठहरादो ॥ कोई ख्याल मत करो जो आवे, उसको वहीं दबादो ॥ ११ ॥ फेरदे धारा गंगाकी ॥ मौज ले फिर मन चंगाकी ॥ जैसे वायू के बल उठते, तरंग जलमें भारी ॥ तैसें माया के बस चलती, मन की मौजें न्यारी ॥ १२ ॥ माया मूल मेट भाई ॥ कलपना तोड़े चतुराई ॥ यही बीज संसार तरूका, तीन लोक में छाया ॥ रंग रंग के फूल खिले छै, सुख

दुख फलन सुहाया ॥ १३ ॥ कलपना बीज एक तिल भर ॥ बढ़ै तो चढै गगन ऊपर ॥ मन मौजों का कटक बिकट है, बीर बड़े बल कारी ॥ खेत छोड़ कर इस के आगे, भागे सुर नर नारी ॥१४॥ लड़ाई खेल नहीं मनकी॥ बात यह बडी है मुश्किल की ॥ मनके मारे सब फिरते हैं, जिनने मनको मारा ॥ सोई सच्चा सूर जगतमें, हुआ गगन का तारा ॥ १५ ॥ चढारह मन के घोडे पर ॥ डिगे मत आसनसे तिल भर ॥ जब उपाधि माया की मिटके, मन निश्चल होवेगा ॥ तब सरूप अपना आनँद घन, अनुभव कर पावेगा ॥ १६॥ वृथा जप तप वृत हैं भाई ॥ सुलभ यह रस्ता दिखलाई ॥ जब मन में मन लीन हुआ फिर, तूही तूहै प्यारे ॥ सकल जगत का करता भरता, फिरे विश्व को धारे ॥ बात यह बडी गुरू घरकी ॥ बताई खोल गिरह दिलकी ॥ इसीतरह अभ्यास करो तो मजा देखलो भाई ॥ बिना कृपा बलवंत स्वामिनी, नहीं हाथ कलआई ॥ १७ ॥

पद ५८.

किशोरी पुजवहु मोरी आस ॥ धृ० ॥ इनहीं नैनन सों यहँ देखों, दंपति विविध विलास ॥ १ ॥ वेइ बन कुंज कूल-कालिंद्री, वेइ प्रगटैं रंग रास ॥ २ ॥ अपनो जान कृपा करि दीजै, सेवा मन्दिर खास ॥ ३ ॥

पद ५९.

श्रीपद रुचि मन मोर, बसौ सदा सस्नेह मोर उर मांगत यही निहोर ॥ धृ० ॥ पाद पद्म मधि रहै निरंतर, मति गति रति मन मोर ॥ जिमि सरोज मकरंद पायकें, मधुकर तजैं न ठोर ॥ १ ॥ तापत्रयसंतप्त सतत चित, कलिमल क्लेश

कठोर ॥ काल मान संधान विलोकत, छायो कलियुग घोर ॥ २ ॥ अब न अबेर करहु स्वामिनि छिन, लखो कृपा दृग कोर ॥ देहु देवि बलवंत भक्ति वर, बिनय करत कर जोर ॥ ३ ॥

पद. ६०

दयानिधि नेक कृपाकर हेरो, मोहिं महा मोह तम घेरो॥ ॥ धृ० ॥ पुनि पुनि चित्त विषयकों धावत, फिरत न मेरो फेरो ॥ करि उपाय थाको करुणाकर, संकट कठिन निबेरो ॥ १ ॥ महा मूढ स्वारथ नहिं चीह्नत, भो मायाको चेरो ॥ पादपद्मसों विमुख रहत नित, ऐसो कुटिल घनेरो ॥ २ ॥ भव भय विकल शरण मधि आयो, प्रणतपाल प्रण तेरो ॥ अब बलवन्त दास तन स्वामिनि, कृपा कोरदृग हेरो ॥ ३ ॥

पद ६१.

किशोरी केवल बल मोहिं तोर ॥ धृ० ॥ नहीं स्वर्ग अपवर्ग हि लेखों, पद नख जोति निरंतर देखों, जैसे चन्द्र चकोर ॥ १ ॥ प्रणत पाल पण पाल दयाघन, आरतहरन द्वंद दुख भंजन, करत शास्त्र श्रुति शोर ॥ २ ॥ तुम्हरो चित्त कमलसे कोमल, दीन देखि नहिं धरत नेक कल, करिये न हाहा कठोर ॥ ३ ॥ थाको करत पुकार द्वारपर, अब न विलंब कीजिये पलभर, लखहु दया दृगकोर ॥ ४ ॥ मैं यदि क्रूर कुटिल अभिमानी, पै तव दास सकल जग जानी, त्यागत हँसी न मोर ॥ ५ ॥ जुगन जतन कीन्हें जगमाहीं, बिना कृपा तवं मिलिहै नाहीं, दास न नंद किशोर ॥ ६ ॥ काहु न अब बलवंत बदत है, जी चाहै सो करत फिरत है, केवल तुम्हरे जोर ॥ ७ ॥

पद ६२.

हमारी सुधलेहु राधिका माई ॥ धृ० ॥ जीरणतरणि बिकट भव बारिधि, कोउ न संग सहाई ॥ महामोह तम दशदिश छायो, घाट न बाट लखाई ॥ १ ॥ चंड काम झकझोर पवनगयो, तरणि करण बिनसाई ॥ क्रोध मकर मुख फारि फिरतहै, लोभ भंवर भयदाई ॥ २ ॥ मदमय तुंगतरंगनि तरलित, मत्सर झक दुखदाई ॥ काल कराल कठिन संकट अति, देखत धीर पराई ॥ ३ ॥ दास दौर देवी चरणन लौं, और न ठौर दिखाई ॥ शरणागत बलवंत दीन जन दीजै पार लगाई ॥ ४ ॥

पद ६३.

मात बिन कौन सम्हार करै ॥ धृ० ॥दीन मलीन हीन सदगुणसों, कोउ न कर पकरै ॥ १ ॥ पिता पुत्र भ्राता अरु दुहिता, गुण सों प्रीति करै ॥ २ ॥ अब अवलंब अंब इक तेरो, काहे विलँब करै ॥ ३ ॥ भव बारिधि बलवंत बाल कर, को प्रतिपाल करै ॥ ४

पद ६४.

बाल हठ पूरी कौनकरै ॥ धृ० ॥ जो जगदंब राधिका रानी, नैकन ध्यान धरै ॥ व्याकुल बाल बिलोकत जननी, निज सुख सब बिसरै ॥ ऐसो को उदार जगमाहीं, जासों सुत झगरै ॥ स्वारथ के सब सखा सँघाती, को पर पीर परै ॥ २ ॥ भक्तपाल नतपाल कृपाला, जो ब्रह्मांड भरै ॥ अब बलवन्त दास आशा तरु, सत्वर सुफल फरै ॥ ३ ॥

पद ६५.

नहिं तीन भुवनमें पतीतपावन पायो ॥ वृषभानुकिशोरी-शरण तिहारी आयो ॥ धृ० ॥ कीरतिका डंका तीन लोकमें गाजै ॥ विधि कर्मरेखपर मेख तुम्हारी बाजै ॥ जग जोतिवंत तनु तेज तुम्हारो भ्राजै ॥ नव खंड महीपर प्रचंड राज विराजै ॥ लखि खुले विपुल भंडार दीनगण धायो ॥ १ ॥ भूखे भूमी के भूप असुर सुर पदके ॥ श्रीमान आसके स्वान भये घर घर के ॥ हम कनके भूखे वहभूखे सौमन के ॥ भूखे भूखन सों कहलें याचन करके ॥ बलवंत अन्त नहिं तुम सम दानी पायो ॥ २ ॥

पद ६६.

जगदम्ब जगत अवलंब भक्त सुखदानी ॥ अब द्रवहु दया कर श्रीराधे महरानी ॥ धृ० ॥ हे आदिशक्ति अव्यक्त चरा-चर चारी ॥ दश चारि भुवन परिपालन पोषण हारी ॥ १ ॥ होते के होते तात भ्रात हितकारी ॥ अन होते की जग केवल मात निहारी ॥ २ ॥ चहुंओर निहारों श्रीवृषभानु दुलारी ॥ घर घर में येही नीति रीति संसारी ॥ ३ ॥ बल-वंत बाल बुधिहीन दीन जिय जानी ॥ अब द्रवहु दया कर श्रीराधे महरानी ॥ ४ ॥

पद ६७.

तुम सम कौन स्वामिनी दानी ॥ धृ० ॥ बिन सेवा बिन विनय याचना, देत दीन हितमानी ॥ जिम पियूष धारा-धर धारा, कृपा दृष्टि सरसानी ॥ १ ॥ सरल सुशील सुभाव सुमतिअति, कृपावन्त जग जानी ॥ २ ॥ पालन पोषण सकल विश्वको करत सदामुदमानी॥सबविधि समरथ सबसुखदायक सकलकलागुणखानी ॥३॥ कथा व्यथा बलवन्त दीनजन कहे विना पहिचानी ॥ ४ ॥

पद ६८.

सांची तुमहिं एक जग दानी ॥ धृ० ॥ दीन दुखी सन्मुख देखत ही, द्रवत दया गुणखानी ॥ १ ॥ फिरो न अबलों कोउ द्वार ते, क्रूर कुटिल अघखानी ॥ २ ॥ देत लोक परलोक सकल सुख, जो भक्तन उर आनी ॥ ३ ॥ यह बलवन्त औदार्य बखानत, नाग गिरा सकुचानी ॥ ४ ॥

पद ६९.

रट लागिरही निस दिन जियको राधे राधे जग आराधे ॥ धृ० ॥ त्रैलोक्य राज्ञी कीर्ति सुता ॥ गोविंदप्रिया गुण आगाधे ॥ १ ॥गोलोक स्वामिनी गुणागरी ॥ गोपीजन वल्लभ मोद करी ॥ २ ॥ लावण्य निलय ललिता चारा ॥ लालित्य तत्व ललिताकारा ॥ ३ ॥ गोपीजन गोपं शिवं करणी ॥ वृषभानु नंदिनी जग भरणी ॥ ४ ॥ श्रीश्यामाश्याम मोद दाई ॥ वृज जीवनी संजीवनि राई ॥ ॥ ५ ॥ सौभाग्य प्रदात् मोक्ष दानी ॥ आराध्य तत्व सिद्धिन खानी ॥ ६ ॥ जग जीवनि औषधि वृजेश्वरी ॥ सौन्दर्य आत्मा कृपा सरी ॥ ७ ॥ देवी वसुदेव सुवन सुखदा बलवंत सौख्य शुचि सिद्धिप्रदा ॥ ८ ॥

पद ७०.

जैजै वृषभानु दुलारी, कृष्णा श्री कीर्तिकुमारी ॥ धृ० ॥ श्रीराधे जग आराधे, गोपीश्वरि गुण आगाधे ॥वृजसंजीविनि सुखकारी, जैजै वृषभानु दुलारी ॥ १ ॥जगदंब जक्तप्रतिपाला, गुणवती प्रिया गोपाला ॥ भक्तन भय संकट हारी, जैजै० ॥ ॥ १ ॥ लावण्यनिलय सुखदानी,भक्तन जीवनि जगजानी ॥ कीरति त्रिभुवन बिस्तारी, जैजै० ॥ ३ ॥ प्रणपालप्रणत

जनपाला, मुदमंगल करनि कृपाला ॥ ईश्वरी चराचर चारी, जैजै० ॥ ४ सुन्दरी सुंदरा कारा, श्री ललिता ललिताचारा सुंदरानंद जगधारी, जैजै० ॥ ५ ॥ जीवनि औषधि अभिरामा, गोलोक राज्ञि गुणग्रामा ॥ जगतारन हित अवतारी, जैजै० ॥ ६ ॥ वृषभानु कमल कुलतरणी, श्रीकृष्णचन्द्र मनहरणी ॥ योगेश्वरि योगप्रचारी, जैजै० ॥ ७ ॥ कामदा कीर्ति कुलकेतू, दशचार भुवन की हेतू ॥ प्रेमास्पद प्रेमा कारी, जैजै० ॥ ८ ॥ पावनीपुण्य गुणशीला जगधात्रि अपरमित लीला ॥ श्रीमाया माया हारी, जैजै० ॥९॥ तपरूप तपोनिधि माता, तपसिद्धि प्रदा सुखदाता ॥ मुक्तिदा मुक्ति वृतधारी, जैजै० ॥ १० ॥ कल्याण मूर्ति कलगानी, गुणरूप सकल गुणखानी ॥ बलवन्त बालसुखकारी, जैजै वृषभानु दुलारी ॥ ११ ॥

पद ७१.

जय जय वृषभानु दुलारि मात अवढर दानी ॥ करुणा कर बेगि, धरौ सीस पै वर पानी ॥ धृ० ॥ यह काल घोर चहुं ओर छायरही अंधियारी ॥ १ ॥ डूबे सत ग्रन्थ न पंथ दिखैं ढूंढत हारी ॥ २ ॥ नहिं और हमें कहुं ठौर जगत में तुम जानी ॥ ३ ॥ हम बुरे भलेपर तोर दास राधे रानी ॥ ४ ॥ दृढ गहे चरण बलवन्त कृपा गुणगण खानी ॥ ५ ॥

पद ७२.

स्वामिनि चरण गहों सिर नाई ॥ धृ० ॥ इक द्वै वचन दास के हित कर, कहो स्वामिहि समुझाई ॥ १ ॥ थाकौ

लखचौरासी भटकत, गरी जीव गरुआई ॥ २ ॥ परम अधीर पीर भव भ्रम बस, सूझ न कछु न उपाई ॥ ३ ॥ अब की बेर कृपा करि सुनिये, बिनय दीन चितलाई ॥ ४ ॥ एक बचन सों कृपासिंधुकों, नहिं आवे लघुताई ॥ ५ ॥ जनम मरनदुख अमिट हमारौ, सहज कहे बिनसाई ॥ ॥ ६ ॥ अब बलवंत लाज स्वामिनि कहं, तुम्हरे नाम बिकाई ॥ ७ ॥

पद ७३.

दीनानाथ दयाल दीन प्रतिपालु विनय कर जोर कहौं ॥ धृ० ॥ भव भय भ्रम वस भयो बावरो, नेक नहीं कहुं थाह गहौं ॥ १ ॥ तुम सम समरथ स्वामि शीस पर, तदपि त्रिविध दुख दाह दहौं ॥ २ ॥ सोचत यह निशि बासर बीते, कबलों जिय चुप साधि रहौं ॥ ३ ॥ यही बात बलवन्त स्वामि अब, तुम बिन आन न सरन लहौं ॥ ४ ॥

पद ७४.

ऐसो को दयाल दिन दानि ॥ धृ ॥ बिन सेवा प्रतिपालहि रीझहिं, अवगुण को गुण मानि ॥ १ ॥ आलसि अधम अनाथ निवाहन, कीरति जग सरसानि ॥ २ ॥ बिना दिये मन मुदित रहत नहिं, यह जिनके चित बानि ॥ ३ ॥ तजो न अस बलवंत नाथ पद, जो सब सुखकी खानि ॥ ४ ॥

पद ७५.

तुम्हारे करुणाके बलिहारी ॥ धृ० ॥ थाकत जहां उपाय सुरासुर, तहां करत रखवारी ॥ १ ॥ कबहुँ न मुख मोरो जब टेरे, सदा भक्त भयहारी ॥ २ ॥ चीर अपार सभामें

दीन्हे, जब द्रौपदी पुकारी ॥ ३ ॥ अस बलवंत कृपानिधि पद पर, दीजे तन मन वारी ॥ ४ ॥

पद ७६.

प्रभु तुम कीन्ह अनुग्रह भारी ॥ धृ० ॥ सर्वशक्ति सुख धाम नाम निज, दीन्हों दया विचारी ॥ तदपि जीव हत भाग्य लेत नहिं, सह अनुराग सुधारी ॥ १ ॥ जन मन मुकुर मलिनता मंजन, जगरंजन सुखकारी ॥ प्रफुलित कर कल्याण कुमुद जिम, शरद चंद्र उजियारी ॥ २ ॥ विद्यावधू प्राणपति पूरण, सहित प्रेम अधिकारी ॥ श्रेष्ठ सुधा सो अमर अजर कर, जग त्रय ताप निवारी ॥ ३ ॥ आतम अमल करन अघ ओघन, भंजन विपति विदारी ॥ अधम उधारन भवनिधि तारन, निगमागम निर्धारी ॥ ४ ॥ दारा धरणि धाम धन सब तजि, मांगत गोद पसारी ॥ हेतु रहित प्रतिजन्म भक्ति निज, दीजै भव भय हारी ॥ ५ ॥ कब वह सुदिन दिखावहु स्वामी, नाम लेत इक बारी ॥ गद्गद गिरा प्रेम पुलकित तनु, बहै विलोचन वारी ॥ ६ ॥ पल भर कल न परत तुम्हरे बिन, बीतत जुग अनुहारी ॥ हेरत पथ दृग थकित भये अति, जगत शून्य अनुसारी ॥ ॥ ७ ॥ लेहु लगाय हृदय मोहिं चाहे, पायन दलो बिहारी ॥ केवल तुमहि प्राणपति मोरे, अपर न विश्व मझारी ॥

पद ७७.

तात मात पति भ्रात सखा गुरु, प्रभु पदसों सब नाते मोर ॥ धृ० ॥ कीरय उपाय बेगि अस कछु प्रभु, परों न पुनि भव बंधन घोर ॥ १ ॥ मो प्रण चरण कमल अवलम्बन, प्रणत पाल प्रण स्वामी तोर ॥ २ ॥ अब बलवंत बिलम्ब कवन विधि, देहु दृष्टि निज वृदकी ओर ॥ ३ ॥

पद ७८.

तुम विन नाथ कौन पै अब मैं, जाय कहौं निज जियकी बात ॥ धृ० ॥ कल न परत सब ही प्रपंचमें, पै निशि वासर तलफत जात ॥ १ ॥ केवल इक तुम्हरी सुधि स्वामी, जब आवत तब हियो सिरात ॥ २ ॥ तव पद पद्म पुनीत प्रीति यदि, तो सुधि पुनि पुनि किहिं बिसरात ॥ ३ ॥ मो मन जो प्रपंच रुचि सांची, तो जियरा काहे अकुलात ॥ ॥ ४ ॥ कब बलवंत कृपानिधि मोरी, सुमिरनमें बीतें दिन रात ॥ ५ ॥

पद ७९.

जा तुमसा हो कोई देव बतादो हमको, दिन रात नहीं फिर आके सतावें तुमको ॥ १ ॥ जब नहीं आपसा और कोई मिलताहै ॥ फिर रोनेमें अपराध हमारा क्या है ॥ २ ॥ जहां एक वैद्य हो और पीर तन भारी ॥ वह सुने न दुख फिर रोना है लाचारी ॥ ३ ॥ मर्जी हो इक तद्बीर अर्ज करता है ॥ नितका यह झगडा जिससे सहज मिटताहै ॥ ४ ॥ नहिं कौडीका भी खर्च नाम हो तेरा ॥ हंस के कह दो बलवंत दास है मेरा ॥ ५ ॥

पद ८०.

हे महाप्रभू चैतन्य सुधाकर, हे प्रभु नित्यानंद दयाकर ॥ धृ० ॥ भक्ति दानि भगवंत दीजिये, जानि मोहिं चरणनको किंकर ॥ १ ॥ मिले मुक्ति पै भक्ति न पावे, बिन तव कृपा कोउ जगमें नर ॥ २ ॥ लई शरण बलवंत तुम्हारी, धरहु माथ पर नाथ वरद कर ॥ ३ ॥

पद ८१.

धन धन्य प्रभू चैतन्य गाथ जग तेरी ॥ महि भक्ति प्रचारन आप रूप प्रगटे री ॥ धृ० ॥ जब भारत खंड प्रचंड जैन मत छाया ॥ श्रुति कर्म धर्म आचार सकल बिनसाया ॥ तब शंभूने तनु धरि पाखंड मिटाया ॥ रहि भक्ति गुप्त यद्यपि ज्ञान जग छाया ॥ भगवंत तबै शिव कर्म न्यूनता हेरी ॥ महि भक्ति प्रचारण आप रूप प्रगटे री ॥ धन्यधन्य प्रभू० ॥ १ ॥ बंगाल देश नव द्वीप नगर सुखदाई ॥ गौरांगरूप श्री जुगल दिये दरसाई ॥ घन घोर भक्ति रस घटा घुमडि नभ छाई ॥ भय ताप मिटाये सुधा बुंद बरसाई ॥ तुम जग जीवनके फँद दिये निरबेरी ॥ धन धन्य प्रभू० ॥ २ ॥ खेलत आंगन चांडाल चोर उद्धारे ॥ कैसे अति अधम जघाइ मघाइ तारे ॥ करि केहरि बनमें कृष्ण नाम उच्चारे ॥ पद पारस परसत बंध अमित जन टारे ॥ गौरांग प्रभू क्यों करी मेरे हित देरी ॥ धन धन्य प्रभू० ॥ ३ ॥ इकबेर रजकसे श्रीहरि नाम लिवाया ॥ कहते ही भक्तिरस रोम रोममें छाया ॥ फिर जिसने उसके तनको हाथ लगाया ॥ होगया मस्त तत्काल प्रेम पद छाया ॥ चैतन्य चंद काटिये बेगि भव भेरी ॥ धन धन्य प्रभू० ॥ ४ ॥ सब काशी के संन्यासी ज्ञान अभिमानी ॥ आचरण प्रभूका देखि लाये मन ग्लानी ॥ जब चली नाथसे वेद वाद की बानी ॥ सुनि द्वैत अर्थ उपनिषद मती बौरानी ॥ नव खंड मही प्रभुकी कीरति ने घेरी ॥ धन धन्य प्रभु०॥५॥ जब नवद्वीप नव्वाब यवन दुखदाई ॥ करी नगर कीर्-तन की सब ठौर मनाई ॥ तब स्वप्नेमें धरि सिंह रूप डर पाई ॥ हरि नाम कीरतन प्रगट कियो सब ठाई ॥ तिहि उद्धारा बलवंत बजी नभ भेरी ॥ धन धन्य प्रभू चैतन्य गाथ जग तेरी ॥ ६ ॥

पद ८२.

चाल लावनी.

सुनके बडा दरबार तुम्हारा दूरसे आयेहैं ॥ पतित पावन नाम आपका, वेद शास्त्र यश गाये हैं ॥ १ ॥ नहीं फिरा है निराश कोई, जो इस दर पै आया है ॥ दौलत हश्मत दीन ऽरु दुनिया, जो चाहा सो पाया है ॥ २ ॥ जिसका नहीं कोई वाली वारिस, है उसका दरबार यही ॥ लावारिस जो माल हुआ उसकी मालिक सरकार सही ॥ ॥ ३ ॥ तू मालिक मैं बन्दा तेरा, अब इसमें क्या झगड़ा है ॥ पापोंके क्या देख अडम्बर, प्यारे दिलमें बिगड़ाहै ॥ ४ ॥ करनीको क्या देखतेहो, अपनी तरफ कुछ नजर करो ॥ करो कुछ ऐसा जैसे तुम हो, खता हमारी माफ करो ॥ ५ ॥ औरोंने जब टेर करी, फिर देर नहीं की एक घडी ॥ मेरी खातिर देर लगी क्या, ऐसी मुशकिल आन पडी ॥ ६ ॥ जलवा कुछ दिखलाव नाथ जी, तौ अब हिन्दू धर्म बचै ॥ हटाव पर्दा दिखाव मुहको, दो आलममें धूम मचै ॥ ७ ॥ पुरानोंकी तौ पुरानी बातें, हो होगईं अब कुछ और चलै ॥ नाम जहांमें होवे तेरा, और हमारा काम चलै ॥८॥ देरदार मत करो नाथ अब, अर्जी तुम पर लाये हैं ॥ दरपै खडा बलवंत पुकारे, शरण तुम्हारे आयेहैं ॥ ९ ॥

पद ८३.

डंके हैं त्रिभुवन नाथ नामके तेरे ॥ बैठे हैं आज बृजराज तेरा घर घेरे ॥ १ ॥ तुम लछमीपति भगवान कृपा आगारे ॥ क्या भूख हमारी जरा बिचारो प्यारे ॥ २ ॥ घनघोर मेघ मंडल बरसें महि सारे ॥ तहां प्यासा चातक जैसे चोंच पसारे ॥ ३ ॥ जहँ सदा भरा भरपूर पयोनिधि भारा ॥

वहँ क्या हैगा इक अंजुलि नीर उदारा ॥ ४ ॥ नहिं तुम सम कोउ बलवन्त दान व्रतधारी ॥ अब पूरण कीजै इच्छा नाथ हमारी ॥ ५ ॥

पद ८४.

बृजराज सुनहु महराज विनन्ती मेरी ॥ अब कृपा करो दुख हरो शरणमें तेरी ॥ धृ० ॥ दारिद्र दुःख दल दलन परम उपकारी ॥ प्रभु चरण आपके शरण सुरासुर झारी ॥ तुम भक्तन के हित अनेक नर तनु धारी ॥ नहिं टेक भेष की नाथ कबहुं तुम टारी ॥ दीनन प्रतिपालनहार दया दृग हेरी ॥ १ ॥ उद्धारे अधम अनेक वेद गुण गाई ॥ अस अमल अनूपम गाथ तिहूं पुर छाई ॥ पावक न जरो प्रह्लाद मयासुर सोई ॥ तुम राखौ ताको मार सकै नहिं कोई ॥ श्री कृपावन्त भगवन्त विपत निर्वैरी ॥ २ ॥ तुम तात मात गुरु बंधु द्वारकाबासी ॥ अस जतन करो जदुनाथ कटै भवफांसी ॥ बहुनात तोहि मोहि कृपासिंधु गुणरासी ॥ सन्मुख सारे संसार करो मत हांसी ॥ करुणाकर दीनदयाल करो मत देरी ॥ ३ ॥ हे दीनबंधु सुखसिंधु देवकीनंदन ॥ जगदीश जक्त प्रतिपाल देव जगबंदन ॥ गोपीजनवल्लभ श्याम गोपकुल-मंडन ॥ दीननके दारिद्दहन दीन दुख खंडन ॥ भगवंत जान बलवंत चित्त निज चेरी ॥ ४ ॥ अब कृपा करो० ॥

पद ८५.

दुर्घट संकट आपडे भयंकर भारी ॥ निर्वारो कृपा निधान कष्ट भयहारी ॥ धृ० ॥ तुम पति राखी द्रौपदी सती दुखटारौ ॥ हो पार्थ सारथी कौरवदल संहारौ ॥ तुम पूरण कियो जो हट ध्रुव बालक धारौ ॥ पद अटल दियो जो टरै न काहू टारौ ॥ दुखि दीनन देखि न सकत दया व्रत

धारी ॥ १ ॥ तुम टेर सुनी गज की खग पति तजि धाये ॥ गहि चक्र नक्र शिर काटि नाग अपनाये ॥ कर पकारि कंस के केस प्रभाव दिखाये ॥ भूतल पछारि निज बल खल प्राण नसाये ॥ सुर असुर पशू पक्षी तारे नर नारी ॥ २ ॥ तव कीरति अमल अनूप वेद विस्तारी ॥ गोविन्द त्रिविक्रम विष्णु चतुर्भुज धारी ॥ मधुसूदन वामन श्रीधर पर उपकारी ॥ प्रद्युम्न अधोक्षज नरहरि हरि सुखकारी ॥ हे हृषीकेश संकर्षण कृष्ण मुरारी ॥ ३ ॥ अनिरुद्ध जनार्दन वासुदेव अविनासी ॥ हे पद्मनाभ दामोदर जन मन बासी ॥ हे उपेंद्र उत्कट असुर प्रबल दल त्रासी ॥ जो पठन करै पद काटि हैं संकट रासी ॥ बलवन्त सदा भगवन्त चरण बलिहारी ॥४॥

पद ८६.

स्वामि बिन ऐसो कौन दयाल ॥ धृ० ॥ सुमिरन करत विकल उठि धावें, करैं भक्तप्रतिपाल ॥ १ ॥ राखत हैं निज जन निस वासर, जिम कच्छप प्रियबाल ॥ २ ॥ टेरत कूदि खंभ कों फारौ, बिपत हरी तत्काल ॥ ३ ॥ अन्य भजें जग छांडि स्वामि अस, फसेंते माया जाल ॥ ४ ॥ सुरत संग लागे रहैं निस दिन, धन बलवंत कृपाल ॥ ५ ॥

पद ८७.

नाथ बिन को पति राखन हार ॥ ऐसो कौन उदार ॥ ॥ धृ० ॥ ग्रस्यो ग्राह गजराज जब, व्याकुल करी पुकार ॥ चक्र नक्र शिर काटि कें, लीन्हों त्वरित उबार ॥ १ ॥ जब दुःशासन द्रोपदी, सन्मुख राज समाज ॥ बिना बसन लागो करन, तब राखी प्रभु लाज ॥ २ ॥ जिन कों या संसार में, नहीं कहूं आधार ॥ तिनके दीन दयाल प्रभु, तुमहिं एक रखवार ॥ ३ ॥ व्याध गीध गणिका जिन्हें,

तज्यौ सकल संसार ॥ ऐसे अधम अनाथ ते, त्वरित किये भवपार ॥ ४ ॥ प्रणतपाल प्रणपाल हरि, त्रिभुवन सुयश तुम्हार ॥ देखि मगन बलवन्त छबि, बार बार बलिहार॥५॥

पद ८८.

दीन हितकारी मोरा नाथ ॥ धृ० ॥ अजामीलसे अधम उधारे, विश्वविदित गुण गाथ ॥ १ ॥ जब जल मांझ ग्राह गज खींच्यौ, डूबत पकऱ्यो हाथ ॥ २ ॥ विनय करत बलवंत जोर कर, कीजै आज सनाथ ॥ ३ ॥

पद ८९.

मैं अस श्रवण सुनी बृजराज ॥ दीन दयाल पतित पावन प्रभु, राखत जनकी लाज ॥ धृ० ॥ गज अति दीन हीनबल भो जब, ग्रस्यो आय झषराज ॥ आरत गिरा उचारत पहुंचे, त्वरित त्याग खगराज ॥ १ ॥ केवट कीश असुर किय पावन, दै धन राज समाज ॥ भनि बलवंत कान्त कमलाके, लीजिये नाथ निवाज ॥ २ ॥

पद ९०.

सुनिये अरज हमारी, गिरधारी संकट हारी, डूबत लेहु उबारी ॥ धृ० ॥ मैं पतित तुम पतित उधारन, अपनी ओर निहारी ॥ जन बलवंत आस चरणनकी, आयों शरण तुम्हारी ॥ २ ॥

पद ९१.

सुनिये दीनदयाल देव दीनन दुखहारी ॥ दीनबन्धु सुखसिन्धु दयानिधि जन हित कारी ॥ १ ॥ बिना पंखके बाल विहँग व्याकुल जस भारी ॥ पीडित क्षुधा महान वत्स जिम

धेनु निहारी ॥ २ ॥ तृषित चातकी स्वातिबूंद हित बदन पसारी ॥ पिया पियाकी बाट तकत नैनन जल ढारी ॥३॥ तैसे अब बलवन्त विलोकत बाट तुम्हारी ॥ बेग दरस अब देहु कृपानिधि कुंजविहारी ॥ ४ ॥

पद १२.

दरस अब दीजे श्रीनंदलाल ॥ धृ० ॥ अब नहिं सह्यो जाय मोपे दुख, करुणा करिय कृपाल ॥ १ ॥ बीते जुग अनंत पद बिछुरे, धीरज अब न गुपाल ॥ २ ॥ मैं यदि क्रूर कुटिल अघ खानी, तुमहो पतितन पाल ॥ ३ ॥ कृपा-पंथ बलवंत निहारत, कीजे बेगि निहाल ॥ ४ ॥

पद १३.

श्याम मुख देखे ही परतीत ॥ धृ० ॥ ऊधो कहा सिखा-वत हमको, ज्ञान ध्यान की रीत ॥ १ ॥ हम अबला नहिं जानी ऐसी, लावत कटु फल प्रीत ॥ २ ॥ यह बलवंत विरह रसके बस, लैहैं तिहुं पुर जीत ॥ ३ ॥

पद १४.

सेवक न जियेंगे बिना दरस पद पाये ॥ नहिं आप रहोगे बिना कृपा दिखलाये ॥ १ ॥ हैं सुभाव अपने अपनें बने बनाये ॥ यह अखंड नाते कैसे मिटैं मिटाये ॥ २ ॥ फिर क्यों रखते हो वृथा जिया तरसाये ॥ इक दिन तो देउगे मुझे मेरे मनभाये ॥ ३ ॥ कभी उदारता में विचार नहिं आताहै ॥ जब देना है फिर उस में आज कल क्या है ॥ ४ ॥ दाता तो दीन मुख देखे ही देता है ॥ बलवंत करे मत देरी दिल दुखता है ॥ ५ ॥

पद ९५.

रहते हैं व्यथित नित विरह विपत के घेरे ॥ मुख दिखा दियाकर कभी तो सांझ सबेरे ॥ १ ॥ तुमहीं हो केन्द्र मेरे सुख संपति केरे ॥ तेरे ही नाम से फिरे हैं मेरे फेरे ॥२॥ नहिं रही जरा भी सकत श्याम तन मेरे ॥ दम निकल जायगा हाय बिछुरते तेरे ॥ ३ ॥ जावेंगे योंही क्या बिना कमल मुख हेरे ॥ बलवंत तुम्हारे जनम जनम के चेरे ॥ ४ ॥

पद ९६.

दीनानाथ कहां लगाई देर ॥ धृ० ॥ बाट तकत अँखियां पथराईं, थाकौं मग मग हेर ॥ १ ॥ करत पुकार कंठ कुंठित भो, सुनी न अबलों टेर ॥ २ ॥ जन बलवन्त आस दरशनकी, परो द्वार तव घेर ॥ ३ ॥

पद ९७.

सोचत मोहिं बहुत दिन बीते ॥ धृ ॥ चाहत बहुत स्वामि-पद सेवन, होत नहीं चित चीते ॥ १ ॥ यह परचण्ड प्रबल मायासे, जीव कवन विधि जीते ॥ २ ॥ व्याकुल रहत सतत जिय मेरो, कृपासिन्धु याहीते ॥ ३ ॥ कौन दशा बलवन्त होय अब, रहत सदा भय भीते ॥ ४ ॥

पद ९८.

मन की भीति मोहिं अति भारी ॥ धृ० ॥ पलटत जाहि पलक नहिं लागे, जिमि भुजंग विषधारी ॥ १ ॥ जोगी जती साधु संन्यासी, रहे सकल हिय हारी ॥ २ ॥ नहिं विश्वास यदपि सतसंवत, रहै सुमारग चारी ॥ ३ ॥ पीपी पयहिं गरल खल उगले, दुष्ट भयंकर भारी ॥ ४ ॥ रुकै न अब बलवंत कृपा बिन, काली दमन मुरारी ॥ ५ ॥

पद ९९.

ये मन मूढ सुभाव आपनो, नाथ काहुविध नाहिं तजै ॥ धृ ॥ जिहि कारण दारुण दुख पावत, करत सोइ शठ नाहिं लजै ॥ १ ॥ किये अमिय उपदेश अनेकन, तिनहिं निदरि विष विषय भजै ॥ २ ॥ नेक न शठ हठ तजै आपनी, कहौं खलहिं कहं लों बरजै ॥ ३ ॥ मन मतंग बलवन्त न माने, हरिपद अंकुश धरो निजै ॥ ४ ॥

पद १००.

जग षट वैरी बलवान, करैं मतिहान, सुर ईश, गिरीश, मुनीश, सबनके करैं गलित अभिमान ॥ धृ ॥ ये क्रोध अनल जग जारा, नीती पथ लोभ बिगारा ॥ कामिनी कामना नैन बान, बस कीनो सकल जहान ॥ १ ॥ यह मोह पाश अति भारी ॥ जीते गल फांसी डारी ॥ मद मदन मौजकी फौज चढै, तब को ठैरै बलवान ॥ २ ॥ उर मत्सर भुजंग भारा ॥ विष सुख पुर सकल उजारा ॥ जब धारि प्रखर तरवार चढैं छैडें, कौन बचावे प्रान ॥ ३ ॥ जग जीव बाल इक जानो ॥ तिहि साथी ज्ञान पुरानो ॥ बलवंत बिकट जब जुद्ध जुरै, तब पत राखे भगवान ॥ ४ ॥

पद १०१.

प्रभुकी महिमा अगम अपार ॥ धृ० ॥ नेति नेति निगमागम गायो, रहे मौन मुनि धार ॥ १ ॥ थाके शेष महेश सुरेशहु, कोउ न पायो पार ॥ २ ॥ दीन दयाल विश्व उद्धारण, धारो बृज अवतार ॥ ३ ॥ सेए न सहित सनेह चरण जिन, ते डूबे मजधार ॥ ४ ॥ जे बलवन्त शरण तकि आये, भयो सहज उद्धार ॥ ५ ॥

पद १०२.

कृपानिधान सुजान प्राणपति, तुम्हरी सुध कैसी बिसरावे ॥ संकट हरण भरण पोषणता, इनकी जब उरमें सुध आवे ॥ पल पल प्रीति जियामें उमँगत, नैनन में माधुरि छवि छावे ॥ १ ॥ जिनको जीवन चरण तुम्हारे, किहि विधि वे निज समय बितावें ॥ वत्सलता, ममता, सुशीलता, सुन्दरता प्रति पल सुध लावे ॥ २ ॥

पद १०३.

दयानिधान सुजान प्राणपति, दूर देस किमकर मोहिं डारो ॥ मेरोही भार भयो कह भारी, भुवन चतुर्दशको रखवारो ॥ धृ० ॥ यदि अपराधी तदपि किते दिन, सहिहों सिक्षाभार दुखारो ॥ नीति रीति विपरीत होय सब, जो जुग जुग मोहिं योंही टारो ॥ १ ॥ दुःख वियोग दुसह भो अब तो, बेगि उपाय दयाल बिचारो, रोय रोय अँखियां लाल भईं, अरु कंठ रुद्ध भो करत पुकारो ॥ २ ॥ जल बिन मीन सुता बिन माता, जिम धेनू बिन बत्स विचारो, तैसी है हरि दशा हमारी, अब बलवंत दया उर धारो ॥ ३ ॥

पद १०४.

प्रभु विन को भव विपत हरै ॥ धृ ॥ संसृत व्याध अगाध जीवकी, टारे नाहिं टरै ॥ १ ॥ ज्यों ज्यों याहि बिचारो त्यों त्यों, दुर्घट दृष्टि परै ॥ २ ॥ गलित होत आयुध साधन सब, यह मग चरण धरै ॥ ३ ॥ बाल ख्याल नहिं मुक्ति पदारथ, योगिन धीर गरै ॥ ४ ॥ निज भुजबल बलवंत नहीं कोउ, दुस्तर सिन्धु तरै ॥ ५ ॥

पद १०५.

बहुत दिन टारो अब न टरे ॥ धृ०॥ जनम जनम के दास आपके, कैसे पद बिसरे ॥ १ ॥ समरथ नाथ विना निज दुख कर, कासों विनय करैं ॥ २ ॥ आस और विश्वास कहां लों, व्याकुल जीव धरैं ॥ ३ ॥ अब बलवंत होय सो होवे, द्वारो घेर परैं ॥ ४ ॥

पद १०६.

कृपा गुण गाथ चहूं दिस छाई, सुनि जन आये धाई ॥ ॥ धृ० ॥ कहा कथा गज गीध व्याध की, जिंहि जन पुनि पुनि गाई ॥ कोटि कोटि नित पतित उधारत, साखी जिन गति पाई ॥ १ ॥ जो चित चढी कामना जाके, पूरण की यदुराई ॥ सदा खुले भंडार स्वामिके, कर सक को समताई ॥ २ ॥ सकुचत हों निज दीन दशा लखि, अरु तुम्हरी प्रभुताई ॥ समझ परै नहिं नेक कवन बिधि, लियो दीन अपनाई ॥ ३ ॥ तदपि सतत भय भीत रहतहौं, लखि निज चित चपलाई ॥ यह बलवन्त कुशील कुमति अति, करै न पुनि कुटिलाई ॥ ४ ॥

पद १०७.

कृपानिधि चरण शरण अब दीजै ॥ धृ० ॥ जन्म अनेक भ्रम्यो भव सागर, अब जिन नाथ तजीजै ॥ १ ॥ शरणागत प्रतिपाल नाथ पन, तापर छिन चित दीजै ॥ २ ॥ दया सिन्धु दीनन प्रतिपालक, जन अपनो करलीजै ॥ ३ ॥ भव-बाधा बलवन्त व्यथित अति, करुणा सत्वर कीजै ॥ ४ ॥

पद १०८.

कारि साधन हारे, मिटा न भवका फेरा ॥ अब आपहि करो उपाय, नाथ कुछ मेरा ॥ १ ॥ मायाने ऐसा हाथ, सीस

पर फेरा ॥ जितना सुलझाया जाल पडा उलझेरा ॥ २ ॥ जुग बीते नाथ अनंत, बिपतने घेरा ॥ दुखद्वंद काटि ब्रज चंद्र करो, निर वेरा ॥ ३ ॥ है अधम उधारन नाथ, विदित ब्रद तेरा ॥ अब कृपा करो बलवंत चरण का चेरा ॥ ४ ॥

पद १०९.

अपराध मेरे जिन ध्यान धरो, हे दयासिंधु अब क्षमाकरौ। ॥ धृ० ॥ में अतिदीन मलीन हीन मति, माया जाल परौ ॥ ॥ १ ॥ समरथ नाथ उदार सुमति शुचि, सुमिरत को न तरो ॥ २ ॥ श्रीयदुनाथ गाथ यह सुनिसुनि, उर अनुराग भरो ॥ जुगलचरण बलवंत शरण अब, भव दुख द्वंद्व हरो ॥ ३ ॥

पद ११०.

हमारो जीवन नाम तिहारो ॥ धृ० ॥ विसरत सुरत स्वांस इक जाकी, बिकल होत जिय भारो ॥ याहि आसरे सुख सों जीवत, आन न पोषण हारो ॥१॥ चाखत रस रसना रस बाढत, अंमृत कहा विचारो ॥ हारे को हरि नामहिं जगमें, केवल तारन वारो ॥ २ ॥ जीवन मूरि यही विरहिनको, जहं लगि दृष्टि पसारो ॥ सो बलवंत नाम यह मुखसों, नाथ न कीजै न्यारो ॥ ३ ॥

पद १११.

तुम बिन आन उपाय न मोरे, शरण भयो करुणाकर तोरे ॥ धृ० ॥ अजित अजा जग व्यापक जाने, ब्रह्मादिक छिनमें झक झोरे ॥ १ ॥ तहं कह कथा होय नर पामर, क्षुद्र अजागज जैसे जोरे ॥ २ ॥ ऐसे प्रबल फंद माया मधि, बंध्यो आय कर्मन के डोरे ॥ ३ ॥ कोउ बिधि बँध बलवंत द्वंदको, छूटै ना बिन तुम्हरे छोरे ॥ ४ ॥

पद ११२.

चरण गहों बिनवहुं कर जोरी, देहु नाथ भव बंधन तोरी ॥ धृ ॥ अधम उधारन नाम तिहारो, कीरति पसरि रही चहुं ओरी ॥ कृपा पंथ निरखत निस बासर, बैठो चरण कमल दृग जोरी ॥ १ ॥ जन्म अनेक भ्रमत भये स्वामी, विपता सही नहीं कछु थोरी ॥ अब बलवंत बिलंब न कीजै, जानि दास वृषभानु किशोरी ॥ २ ॥

पद ११३.

बिनवत बीतो बृजनाथ समय नहिं थोरा ॥ मुखसे बोलो दो बोल, विकल जिय मोरा ॥ धृ ॥ मोतन हरि हेरो नेक, कृपा दृग कोरा ॥ तव चारु वदन निरखत, जिम चंद्र चकोरा ॥ १ ॥ जुग बीते अट्ठाईस, बिहंगपति गामी ॥ नहिं आसा पूरणभई, आजलों स्वामी ॥ २ ॥ तुम दीनानाथ दयानिधि, जस चहुं ओरा ॥ कैसो कीन्हों हमरे हित, हृदय कठोरा ॥ ३ ॥ कन्या जैसे निज श्वसुर, सदन को जावे ॥ लखि जननी आनन, बारबार बिलखावे ॥ ४ ॥ जिम मीन दीन जीवन, बिन कल नहिं पावे ॥ ५ ॥ मृगी भूलि शिशुहि बन, जैसे शोधत धावे ॥ तैसी भइ हमरी दशा, गोपीचित चोरा ॥ बलवंत आस पुजवहु, श्री नंद-किशोरा ॥ ६ ॥

पद ११४.

जन्म योहीं बीतो जात बिहारी ॥ जबतें भो संबंध आपते, मिले न एकहु बारी ॥ कबलों धीरज धरों प्राण-पति, देखहु हृदय बिचारी ॥ १ ॥ बालापन यौवन सब बीतो, स्वेत भई लटकारी ॥ तोउ न नाथ नेक सुध लीन्ही, अस कठोर भये भारी ॥ २ ॥ एक आधार नाम धारि

तुम्हरो, बैठौ सबन विसारी ॥ ३ ॥ अब जिन अंत कंथ कछु देखो, होवे हंसी तुम्हारी ॥ ४ ॥ तुम बिन आन गती नहिं राखो, चाहे देहु विडारी ॥ ५ ॥ गोपीनाथ गाथ करुणा तव, निगमागम बिस्तारी ॥ ६ ॥ करिये बेगि विचार स्वामि चित, अपनो नाम निहारी ॥ ७ ॥ अब बलवंत विलंब न कीजै, देहु दरस बनवारी ॥ ८ ॥

पद ११५.

तुम्हीं पै रचो है सुहाग बिहारी, नाथ कवन बिधि सुरत विसारी ॥ धृ० ॥ कृपानिधान सुजान प्राणपति, क्षमिये भूल चूक बनवारी ॥ १ ॥ जो अपराध अगाध किये मैं, समरथ नाथ उदार बिचारी ॥ २ ॥ बांह गहेकी लाज तुम्हीं को, प्रीतरीत प्रतिपाल मुरारी ॥ ३ ॥ दया निधान कान दै सुनिये, करत विनय श्रीपद सिर धारी ॥ ४ ॥ बहुत अबेर भई करुणा कर, अबलों सूनी सेज हमारी ॥ ॥ ५ ॥ अति व्याकुल बलवंत बिरहबस, दरस देहु श्री कुंज-बिहारी ॥ ६ ॥

पद ११६.

लगन तोसे लागी रे घनश्याम ॥ धृ० ॥

दोहा।

प्रीतम परम सुजान पुनि, कृपासिन्धु गुण धाम ॥ रूप शील गुण सींव शुचि, लाजत कोटिन काम ॥ १ ॥ धृ० ॥

[चाल]

कुटिल लटा लटकें मुख ऊपर, बदन इन्दु छबि छटा मनोहर ॥ भृकुटी कुटिल नैन मन्मथसर, सोहत सुन्दर वेणु अधर पर ॥

दोहा।

ऐसे रूप अनूपको, देखि गई बौराय ॥ ढूंढत बृज बलवंत सब, घर अँगना न सुहाय ॥ १ ॥

पद ११७

कुर्बान जान सूरत पै किया करतेहैं ॥ हम तुम्हें देख बृजराज जिया करतेहैं ॥ १ ॥ गजराज मस्त जिस तरह चुआ करतेहैं ॥ दिन रैन हमारे नैन बहा करतेहैं ॥ २ ॥ यों प्रीति बेलको पानि दिया करतेहैं ॥ कब फूलेगी यह बाट तका करतेहैं ॥ ३ ॥ कोइ पूछे क्या बलवंत किया करतेहैं ॥ आगेकी मंजिल सफा किया करतेहैं ॥ ४ ॥

पद ११८

जबसे देखी झलक तुम्हारी, हुवा है यह दिल दीवाना ॥ तेरे कारण, नाथजी, लिया फकीरीका बाना॥ धृ० ॥ कितने जनम बीत गये योंहीं, कब तक दिलको बहिलाना ॥ १ ॥ तनमें खाक रमाई मनको, किया है सबसे बेगाना ॥ २ ॥ बालापनकी प्रीति सांवरे ,हाय भूल कहिं मतजाना ॥ ३ ॥ जबसे तुझसे हुई मुहब्बत, और किसीको नहिं जाना ॥४॥ मरतेहैं हम तेरी सूरतपै, शमापै जैसे परवाना ॥ ५ ॥ सब रोनकहै तेरे जातकी, वर्नाहै जग वीराना ॥ ६ ॥इस बलवंत इश्कका तेरे, रहेगा जगमें अफसाना ॥ ७ ॥

पद ११९

कमल मुख कबलों दुराये रहौगे ॥ धृ० ॥ निशि दिन दरस लुब्ध दृग मधुकर, कब सुख देन चहौगे ॥ १ ॥ प्राणनाथ यदुनाथ कवन दिन, हँसि हँसि बैन कहौगे ॥ २ ॥ कब करि

पूरण आस हमारी, तिहुं पुर शुयश लहौगे ॥ ३ ॥ दृढ भरोस बलवंत विरह लखि, हरि कर धाय गहौगे ॥ ४ ॥

पद १२०

जबसे देखे श्याम सुंदर सखि, पलभर पलक न लागी ॥ ॥ धृ० ॥ निशि दिन विकल विलोकत चहुंदिशि, श्याम रूप अनुरागी ॥ १ ॥ बीतत युगसम निमिष विरहवस, काम अनल उर जागी ॥ २ ॥ भूषण बसन भार विषसम भये, खान पान दिय त्यागी ॥ ३ ॥ आन मिलैं बलवंत श्याम जब, तबहिं होउं बड़ भागी ॥ ४ ॥

पद १२१

देखी जबसे मोहिनि मूरति, रूपरंगी अँखियां मेरी ॥ हाय कहूं क्या, जागता जादू है सूरत तेरी ॥ १ ॥ नाम तेरा अमृतसे मीठा, स्वाद बढा रसना घेरी । सुनके गुणगण, सदा मैं बिना मोलकी हुइ चेरी ॥ २ ॥ बिरह विकल बलवंत द्वार पर, निसदिन करताहै फेरी । मिलजा प्यारे, बहुत दिन हुये करे मत अब देरी ॥ ३ ॥

पद १२२

वृज बीथिका बजार मोहन, ढूंढिआई रे ॥ धृ० ॥ गोकुल ढूंढि वृन्दावन ढूंढो, द्वारे यसुमति माई ॥ १ ॥ पल पल मोहिं जुगन सम बीतत, रो रो रैन बिताई ॥ २ ॥ बढी व्यथा बलवंत विरह की, दीजै दरश कन्हाई ॥ ३ ॥

पद १२३

जबसे श्याम गये मधुबनको ॥ धृ० ॥ धरत न धीर एक पल आली, कहा करिय या मनको ॥ १ ॥ सूलसे फूल भये

विष बीरी, सिंगार अंगारसे तनको ॥ २ ॥ किहिं बिधि प्राण राखिये सजनी, गताधार जीवनको ॥ ३ ॥ बृजबनिता बलवंत श्याम बिन, करें कहा गृह धनको ॥ ४ ॥

पद १२४.

हे ली अबलों हरि नहिं आये ॥ धृं० ॥ धेनु धाय बत्सन सन लागीं, खगगण नीड बसाये ॥ १ ॥ भूले पथिक प्रातके पंथन, भरमत सदन सिधाये ॥ २ ॥ विरहकथा बलवंत कथन वर, अधिक अधिक रस छाये ॥ ३ ॥

पद १२५.

घनश्याम तुम्हें हेरत हेरत, चहुंओर सकल बृजभूमि फिरी ॥ धृ० ॥ नहिं नाथ पंथको पतो लगो, गृह ग्राम विपिन कंदरी गिरी ॥ १ ॥ कारि मोह भंग रचि भस्म अंग, सेली सिंगी कफनी डारी ॥ लट कुटिल गूंथि सजि जटाजूट, लियो जोग भार माथे भारी ॥ २ ॥ तुमसे जो हितअनहेतु कियो, ताके फल पाय भले बनवारी ॥ यह नेह निवाहन नाथ कियो, तुम भोग करो हम जोग धरी ॥ ३ ॥ जहं रहौ तहां सुख रहौ लला, रचना तो विरंची योंहि करी ॥ श्रीगोपी पदरज रचि बलवन्त, मन मस्त भये डोलें लहरी ॥ ४ ॥

पद १२६.

कहां गया वह पीतम प्यारा श्याम हमारा, मैं ढूंढि फिरी बन बरसाना नंद द्वारा ॥ धृ० ॥ कहं बैठे बदन दुराय जाय मनहारी ॥ देखनको अँखियां तरसें श्याम हमारी॥१॥ कैसे जगनायक जल थलमें संचारी ॥ कहुं ओट उजागर दिखी न सूरत प्यारी ॥ २ ॥ मुख दिखलाना भी हुआ तुम्हें

तो भारी ॥ फिर होय हमारी कौन गती गिरधारी ॥ ३ ॥ इक तेरे नामपर बैठि जनम सब काटा ॥ परतीत प्रेमकों नहीं किसी संग बांटा ॥ ४ ॥ बलवंत अंत नहिं चरणकमल बिन थारा ॥ कहां गया० ॥

पद १२७.

अरी दई मारी जरो यह होरी ॥ धृ० ॥ श्रीघनश्याम वियोग व्यथा बस, कारी भई सब गोरी ॥ १ ॥ रंग गुलाल लाल संग गो अब, धूरि उड़त चहुंओरी ॥२॥ लखि ज्वाला ज्वाला तन सड़के, अँग अँग होरी जोरी ॥ ३ ॥ बिरह बह्नि सों विपिन जरत है, होरी लगी सब ठौरी ॥ ४ ॥ बिरहानल सों सिंधु दहत है, नहिं बड़वानल भोरी ॥ ५ ॥ तडित नहीं तलफल तिय जियकी, नभलों अनल बढो री॥६॥ प्रभु बलवंत वेगि चल मिलिये, जबलों पावक थोरी ॥ ७ ॥ होरी करैं ननरु तिहुं पुरकी, बाला बिरहन बौरी ॥ ८ ॥

पद १२८.

कैसे दूर देस मोहिं डार दई, पुनि नैहर सों कोउ सुध ना लई ॥ धृ० ॥ बैरिन सास ननँद दुखदाई, पीतमसों पहिचान नई ॥ जैसे वत्स बिकल बिन धेनू, तैसी गति निस दिवस भई ॥ २ ॥ भूषण डारों, बसनन जारों, खाय रहों विष हाय दई ॥ ३ ॥ बिन बलवंत मात के हेरे, दशा मिटे नहिं दुःखमई ॥ ४ ॥

पद १२९.

जाकी व्यथा सोई इक जाने, कृष्णप्रीति जिहिं लागी बलाय ॥ धृ० ॥ नासो सुख संसार यहां सब, पीतमपंथ अगम दरसाय ॥ १ ॥ बौरी कहैं कुटुँब पुरवासी, गलिन

बालगण धूर उडाय ॥ २ ॥ खान पान उपभोग रोगसम, उन बिन आन न कछू सुहाय ॥ ३ ॥ गुरुजन स्वजन नित्य मोहिं पूंछें, कैसे पर्दो फारि बताय ॥ ४ ॥ कबहूं गावत कबहूं नाचत, कबहूं जल लोचन भरलाय ॥ ५ ॥ जंत्र मंत्र अरु तंत्र फुरे नहिं, करत उपाय व्यथा अधिकाय ॥ ६ ॥ व्याकुल रहत सतत चित अपनो, उरझें स्वांस जिया घबराय ॥ ७ ॥ दूरदेश पीतमकी नगरी, कृशतन मग पग धरो न जाय ॥ ८ ॥ लोक और परलोक तजे दोउ, नौऊ नेक नहिं उनके भाय ॥ ९ ॥ जनम जनम सजनी योहिं बीते, कबलों जियको धीर बंधाय ॥ १० ॥ हाहा पंथ प्रीतिको दुर्घट, लोगनको तो खेल दिखाय ॥ ११ ॥ इन बलवंत दशा यह अपनी, उत पीतम रहे बदन दुराय ॥ १२ ॥ परबस प्राण भये अब सजनी, करे जो वाको भली लखाय ॥ १३ ॥

पद १३०.

ऊधो कौन जतन अब कीजे ॥ धृ० ॥ यह बिरहा कटु कूट कहांलों, घूंट घूंट कर पीजे ॥ १ ॥ तुम्हरो कपट भयो जग जाहिर, अब नहिं कोउ पतीजे ॥२॥ कान्ह सुजान प्राणपति बिछुरे, कवन आसरे जीजे ॥ ३ ॥ भारी होय भावकी कामरि, ज्यौं ज्यौं रतिरस भीजे ॥ ४ ॥ इतो संदेश चरण गहि हरिके, ऊधो कहि जस लीजे ॥ ५ ॥ बृजबाला बलवंत बिकल अति, बेगि दरस प्रभु दीजे ॥ ६ ॥

पद १३१.

श्याम मुख देखनको बृज तरसे ॥ धृ० ॥ नैनन नीर प्रवाह निरंतर, तन बिरहानल सरसे ॥ १ ॥ ऊधो अहो प्रीतिकी महिमा, आगि लगी जल बरसे ॥ २ ॥ शीस

नमाय चरण गहि कहियो, व्यथा कथा नटवरसे ॥ ३ ॥ अब बलवंत विलंब न कीजे, पलपल युग सम दरसे ॥ ४ ॥

पद १३२.

ऊधो निसिदिन धरकत छाती ॥ धृ० ॥ वनिताहग सरिता सम धारा, बहत रहत दिन राती ॥ १ ॥ आठो जाम रहत तन ताती, मनहु दीपि दइ बाती ॥ २ ॥ करो निदान कवन गद है यह, जासु जियत जर जाती ॥ ३ ॥ बिपति बडी आछे तिय हियमें, अब नहिं नेक समाती ॥ ४ ॥ यह बड ब्रह्मज्ञान पढवेकों, जोग न अबला जाती ॥ ५ ॥ काटतहैं हम काल आपनो, को जानें किहिं भांती ॥ ६ ॥ अब बलवंत प्रेमरस तजिके, और न बात सुहाती ॥ ७ ॥

पद १३३.

ऊधो तुम तो परम सयाने ॥ धृ० ॥ वृजबालनको जोग पढावत, आप भोग लिपटाने ॥ १ ॥ औरन ज्ञान पढावन पंडित, कोरे आप दिखाने ॥ २ ॥ यह तुम्हरे पाखंड ज्ञानको, नहीं कोउ जग माने ॥ ३ ॥ यह बलवंत नेहके झगरे, प्रेम परे पहिचाने ॥ ४ ॥

पद १३४.

ऊधौ मन नहिं पास हमारे ॥ धृ० ॥ भौंह बंक बन्सी बेधन करि, लैगये नंद दुलारे ॥ १ ॥ समझै सुनै ताहि कछु कहिये, बौरन कह सिर मारे ॥ २ ॥ कहत कौनसों कहा न जाने, बोलत बिना बिचारे ॥ ३ ॥ अब न कथौ बलवंत ज्ञान कछु, तुम जीते हम हारे ॥ ४ ॥

पद १३५.

ऊधो प्रीत करी पछतानी ॥ धृ० ॥ हम जानी कछु काल निभेगी, उन कछु औरहि ठानी ॥ १ ॥ आप जाय परदेश बिलम रहे, पठवत तुमसे ज्ञानी ॥ २ ॥ मधुपुरिके राजा भये मोहन, करी कूबरी रानी ॥ ३ ॥ यह झगरे बलवंत नेहके, वरनत सकुचत बानी ॥ ४ ॥

पद १३६.

उनहीं सों लागे नैन हमारे ॥ धृ० ॥ जाके सीस मुकुट पियरो पट, गल वनमाल बिमल डारे ॥ १ ॥ इंदु वदन तिल बिंदु मदन जनु, बैठो सकुचि लाजमारे ॥ २ ॥ भृकुटी कुटिल कटीले लोचन, मनहु विशिख वर अनि-यारे ॥ ३ ॥ कुंचित केश सुवेश सीसपर, माइक मदन फंद कारे ॥ ४ ॥ जमी जाल रंग एक दिखानों, प्राण पखेरू फंसे प्यारे ॥ ५ ॥ ग्वालबाल संग धेनु चरावत, अंग छल बल सब सों न्यारे ॥ ६ ॥ मगन रहत बलवंत दिवस निशि, सो छबि अद्भुत उर धारे ॥ ७ ॥

पद १३७.

हमारे भाग परोहै नेह गवाला पनसों रूपे अराधन परी याहि करटेह ॥१॥ विरह व्याप नित मान मनावन, झगरों और सनेह ॥ सुखशाली सूखे नहिं संतत, परत नेहको मेह ॥२॥ सींचि सींचि बलवंत यही रस, रची विरंची देह ॥३॥

पद १३८.

हमारो कछुहु न और उपाय ॥ धृ० ॥ अपनी अँखियाँ लाल करोंगी, निसदिन नीर बहाय ॥ १ ॥ चुरियां तोरों

मांग बिगारों, बसनन देहुँ जराय ॥२॥ मारोंगी हिय कठिन कटारी, सोय रहों विष खाय ॥ ३ ॥ बिरह व्यथा बलवंत हरहु हरि, नतर बसों वन जाय ॥ ४ ॥

पद १३९.

सुरत मोहिं मोहनकी आवे, सखीरी जियरा अकुलावे ॥ ॥ धृ० ॥ घन घुमंड नभ मंडल छाये, दामिनि दमक कठोर॥ परत फुवार पवन पुरवाई, मोरशोर चहुँ ओर ॥ १ ॥ कूलन पूरि कलिंदनंदनी, बहती करत कलोल ॥ हरित लता तरु कुसुमित कानन, देखि दृश्य अनमोल ॥ २ ॥ सर सरितन सरसीरुह पुंजन, गूँजन भँवर न भीर ॥ शाम तमाल रसाल कुंज लखि, होवत हियो अधीर ॥ ३ ॥

पद १४०.

सुरत नहिं बिसरत पीतमकी, हाय कह भई दशा मनकी ॥ धृ० ॥ धन्य धन्य सौजन्य शीलता, दयालुता उनकी ॥ १ ॥ हियो हिलोरे लेत जब आवत, सुधि उर गुणगणकी ॥ २ ॥ मुख मयंक भ्रूबंक माधुरी, छबि उन अधरनकी ॥ ३ ॥ उरमें उरझ रही सजनी, अनि सायक लोचन की ॥ ४ ॥

पद १४१.

मन उरझो श्रीगोविंद सों, अब सुरझै ना ॥ धृ० ॥ हों तो सहज झरोके झांकी, प्रीति रीति समुझै ना ॥ हँसि हेरो हरि मोतन जबते, पल भर चैन परै ना ॥ १ ॥ मन मूरख को कितो पढाऊं, अपनी हठै तजै ना ॥ वह मूरति माधुरी दृगनसों, टारे तनक टरै ना ॥ २ ॥ खान अरु पान कछू नहिं भावे, मन छिन धीर धरै ना ॥ नंदकुमार मिले

बिनं सजनी, तनमें प्राण रहैं ना ॥ ३ ॥ बेगि उपाय करहु अस आली, जिहि बिध व्यथा बढै ना ॥ बिन बलवंत रूप आराधन, अंकुर प्रीति जगै ना ॥ ४ ॥

पद १४२.

अँखियाँ बृजकिशोर निरखनको ॥ अति अकुलाति सतत घर बाहिर ॥ धरत धीर नहिं छिनको ॥ तरसति रहति निरंतर जैसे, तृषित चातकी घनको ॥ श्रीवृषभानु लली पद पंकज, रहत लगाये मनको ॥ करैं कृपा बलवंत स्वामिनी, तब हिं मिलैं मोहनको ॥

पद १४३.

कहु सजनी प्यारी, गोविंद कब अय हैं गोकुल ग्राम में ॥ ॥ धृ० ॥ सावन मास आस बहु लागी, बीतत भये निरास ॥ भादोंमें माधो आवन की, लागि रही पुनि आस॥ ॥ १ ॥ कहु सजनी प्यारी ॥ धृ० ॥

(उत्तर सखीका)

सावन भादों छाय रहै घन, निसदिन वर्षा त्रास ॥ गवन निषेध कियो निगमागम, जासों तजो प्रवास ॥ १ ॥ सुन राज दुलारी, आवत अब गोपाल लाल, लघुकाल में॥ धृ०॥

प्रश्न–सुआ हाथ पाती लिखभेजी, बीत गये दिन बीस ॥
पलटि नहीं आयो अलि अबलों, कहा भई जगदीस॥
॥ २ ॥ कहु सजनी प्यारी ॥ धृ० ॥

उत्तर–बनबासी बन फल दल खानो, वाकी कहा प्रतीत ॥
बदलत नैन उडत पिंजरासों, नहिं काहूको मीत ॥२॥
सुन राज दुलारी ॥ धृ० ॥

प्रश्न–पिहु पिहु चातक रटत है, दृढ धरि घन विश्वास ॥
मिले न स्वाती बूंद जो, जीवन की किम आस ॥ ३ ॥
कहु सजनी प्यारी ॥ धृ० ॥

उत्तर–चित्रा हस्त लगत गत मेघा, प्रगट जगत यह रीत ॥
बरसे तो बरसे भलो, नाहीं कछुक प्रतीत ॥ ३ ॥ सुन
राजदुलारी ॥ धृ० ॥

प्रश्न–निर्मल जल नभ शशि विमल, लगत शरद सुख धाम ॥
बालम पलटि विदेश सों, सबके आये ग्राम ॥४॥ कहु
सजनी प्यारी ॥ धृ० ॥

उत्तर–राज काज के जाल में, उरझि रहे कहुं वीर ॥ बहुत
अबेर भई याहीसों, तजो न प्यारी धीर ॥ ४ ॥ सुन
राज दुलारी ॥ धृ ० ॥

प्रश्न–सुगुणवंत हेमंत में, घर घर भोग विलास ॥ सब नर
नारी करत हैं, मो पीतम नहिं पास ॥ ५ ॥ कहु सजनी
प्यारी ॥ धृ० ॥

उत्तर–जमिके सर सरितन सलिल, भये शैल अनुमान ॥
कुहर दुरे भू स्वर्ग कस, पग मग धरैं सुजान ॥ ५ ॥ सुन
राज दुलारी ॥ धृ० ॥

प्रश्न–त्रिविधि पवन कुसुमित गहन, भ्रमर सरस गुंजार ॥
कल कोकिल की कूक सुनि, होत करेजो छार ॥ ६ ॥
कहु सजनी प्यारी ॥ धृ० ॥

उत्तर–लखि वसंत विरहा व्यथित, चले भवन सुध लाय ॥
सुमन फूलि शर बनरहे, कंथ पंथ विसराय ॥ ६ ॥ सुन
राजदुलारी ॥ धृ० ॥

प्रश्न–खस खाने खासे खडे, हौदन नीर गुलाब ॥ जल
केली रत नारिनर, नहीं जिया को ताब ॥ ७ ॥ कहु
सजनी प्यारी ॥ धृ० ॥

उत्तर-घोर घाम वायू तरल, जल थल अनल समान ॥ नर-
वर ठाढे जरत हैं, किहि बिधि आवें कान्ह ॥७॥ सुन
राज दुलारी ॥ धृ० ॥

प्रश्न-विरहव्यथासे रैन दिन, बीते द्वादश मास ॥ अब कहु
पीतम मिलनकी, रहैं छोड जिय आस ॥ ८ ॥ कहु
सजनी प्यारी ॥ धृ० ॥

उत्तर-बीर धीर जिन त्यागिये, और एक है मास ॥ अधिक
मास बलवंतमें, पूरण ह्वै है आस ॥ ८ ॥ सुन राज
दुलारी ॥ धृ० ॥

पद १४४.

सुनि आवनकी बात तुम्हारी, सजे सिंगार सहेलिन
प्यारी ॥ धृ० ॥ विविध सुगंध अंग रचि केसर, पहिरी सरस
सुरंग रंग सारी ॥ १ ॥ बेंदी भाल आंजि दृग अंजन, चुनि
चुनि मुतियन मांग सम्हारी ॥ २ ॥ बेला चमेली चक्री
चंपक, कुसुमन सेज सजी सुखकारी ॥ ३ ॥ मंदिर मंजु
दीप मणि राजत, धूप तरंग उड़त मन हारी ॥ ४ ॥ निज
कर हार गूंथि रचि बीरी, धरी साजि शीतल जल झारी ॥
॥ ५ ॥ कहे बलवंत विलम्ब न कीजै, बाट तकत बृष-
भान दुलारी ॥ ६ ॥

पद १४५.

सखी को इनमें नंदकुमार ॥ धृ० ॥ सीस मुकुट मणि पीत
पाट कटि, टकी कोर जरतार ॥ १ ॥ उर विशाल बनमाल
मनोहर, तापर गुंजाहार ॥ २ ॥ मृग दृग भौंहकमान कटा-
क्षन, विष बोरी तरवार ॥ ३ ॥ मुख मयंक बिन अंक केश
जनु, रजनी धरी सुधार ॥ ४ ॥ वय किशोर चित चोर

देहद्युति, तापर यौवन भार ॥ ५ ॥ धन बलवंत श्री कीरति नंदिनि, पूछहिं बारंबार ॥ ६ ॥

पद १४६.

कवनको यह बालक सुकुमार ॥धृ०॥ जागृत मंत्र कलासी डोले, बनमें मुकुट सम्हार ॥ १ ॥ अलि कुल नवल नलिन जिहिं जानी, भरमत सौरभ भार ॥ २ ॥ नव नीरद दल अतुल जानिकें, केकी करत पुकार ॥ ३ ॥ सो मूरत बलवंत लखनकों, बैठे दृगन पसार ॥ ४ ॥

पद १४७.

कर पकर प्रीत युत बोलत नारि सयानी ॥ घर चलो आज नंदलाल करों मिजवानी ॥ धृ० ॥ तुम बहुत दिननमें मिले श्याम सुखरासी ॥ हँस बोल गये गल डार प्रीतिकी फांसी ॥ दिन रैन रही बेचैन बिना तुम दासी ॥ भई आज सफल अँखियां दरशनकी प्यासी ॥ नाहिं छोडोंगी बृजराज आज यह ठानी ॥ १ ॥ निज करसों षट रस भोजन सरस बनाये ॥ दसतीन गुननके सुन्दर पान लगाये ॥ कितने तुम्हरे हित देवी देव मनाये ॥ कोमल कलियनके चुनि चुनि हार सजाये ॥ पूजत बड़ पीपल छनेमोर जुग पानी ॥ २ ॥ लखिप्रीतिप्रीतिप्रतिपाल लाल जसुदाके ॥ गे भवन भामिनी छैल छबीले बांके ॥ बैठे मंचकपर उभय सार सुखमाके ॥ बलवंत निरखि पदकमल मोद मद छाके ॥ करि पूरन आसा हरि अभिमत फल दानी ॥ ३ ॥

पद १४८.

दृगन सों मोहन अब न टरो ॥ धृ० ॥ बदन विलोकि जियत हों मानो, खोटे चाहे खरो ॥ १ ॥ होतहि पलकन

ओट नाथ के, जियरा जात जरो ॥ २ ॥ तुम भगवंत भक्त प्रतिपालक, आज सनाथ करो ॥ ३ ॥ जो बलवंत नेहके सांचे, पाछे पग न धरो ॥ ४ ॥

पद १४९.

मो ढिग सों जिन जाय सँवलिया, मोढिंग सों जिन जाय ॥ मेरो बारो, बारो जियरवा, तुम बिन अति दुख पाय ॥ धृ० ॥ खान पान गुण गान न सूझे, भूषण भार दिखाय ॥ १ ॥ नीर उसीरन देह दहत है, सजी सेज डरपाय ॥ २ ॥ प्राणनाथ तुम जीवन मोरे, विरहा सहो न जाय ॥ ३ ॥

पद १५०.

में बलि जाऊं बारबार, तुम्हरे मनमोहन, एकबेर धुनि वेणु सुनावहु, मोहिरसभीनी ॥ धृ० ॥ तुम्हरी कही हम करत रैनदिन, हमरी कही तुम एक न कीनी ॥ १ ॥

पद १५१.

मगन मन चरण सरोज निहार ॥ धृ० ॥ निधि लावण्य कमलसों कोमल, धारें त्रिभुवन भार ॥ चिन्मय मणि गण भूषण भूषित, भक्तन प्राण अधार ॥ तृण सम तिन्हें तीन पुर सम्पति, जिन देखे इक बार ॥ सो सुख साधु समाधि न पावें, कीन्हें कष्ट अपार ॥ यह रस है बलवंत नियारो, चखौ मौन मन धार ॥

पद १५२.

मोहिं अब और न चाह रही ॥ धृ० ॥ श्यामा श्याम माधुरी मूरति, रसिकन ग्रंथ कही ॥ जोगी जाहि जतन

करि थाके, नेक न थाह लही ॥ १ ॥ सो इन नैनन निसि दिन निरखौं, विचरत कुंज मही ॥ करौ कृपा बलवंत किशोरी, इक अभिलाष यही ॥ २ ॥

पद १५३.

कृपा तुम्हरी सब काज कियो ॥ धृ० ॥ कर्म धर्म व्रत जप तप संयम, सपनेहु नाहिं छियो ॥ १ ॥ सेये न साधु संत संगति नहिं, मुख भर नाम लियो ॥ २ ॥ तदपि जगत दुर्लभ सुर नर कहं, सो सुख नाथ दियो ॥ ३ ॥ अस बल-वंत कृपानिधि पद पर, वारों नित्त जियो ॥ ४ ॥

पद १५४.

रहत नाथ नित निकट हमारे, होत न क्षणहु दृगनसों न्यारे ॥ धृ० ॥ यदि चकोर बिधु बिन दुखियारे, शोधत शशिहु चकोर दुआरे ॥ १ ॥ चातक तृषित तृषाके मारे, घनहु लिये जल ताहि पुकारे ॥ २ ॥ आसक्तन उर उरझे पीतम, उरझे फंद न सुरझन हारे ॥ ३ ॥ नेह नात बलवंत जुरै जब, परजन स्वजन छुडावन हारे ॥ ४ ॥ यही प्रीतिकी रीत प्रगट है, जीत होत है मनके हारे ॥ ५ ॥

पद १५५.

(लावनी)

नहिं आसक्तों से पीतम होते न्यारे ॥ रहते हैं रात दिन साथ हमारे प्यारे ॥ १ ॥ यह पंच प्राण उनके चरणोंपे वारे ॥ पीपीके रूप रस सदा रहें मतवारे ॥ २ ॥ जब लगी लगन दृढ फिर क्या बस अपनाहै ॥ जो होनी होय

सो होय वृथा डरना है ॥ ३ ॥ अब जग जाहर होचुके छुपाना क्या है ॥ हरिनाम बिकाने कहिये जो जी चाहे ॥४॥ कुलकान तजी फिर जगमें डर किसका है ॥ बलवंत प्रीतिका बहुत बुरा चसका है ॥ ५ ॥ श्रुति कही तजें दोउ लोक कृष्ण मिलता है ॥ कुछ भाव बढाओ और अभी रस्ता है ॥ ६ ॥

पद १५६.

हमारे को भटके अब भाई ॥ धृ० ॥ एकहि देव देवकी नंदन, एक शास्त्र प्रभुगीता पाई ॥ १ ॥ एक मंत्र श्रीकृष्ण नामबर, सेवत सदा एक यदुराई ॥ २ ॥ हृदय अधार एक गिरधरको, एक छत्र श्रीपति पद छाई ॥ ३ ॥ एकहि बल बलवंत भये जग, गये दुरित दुख द्वंद पराई ॥ ४ ॥

पद १५७.

नहिं इच्छा अब शेष रखी प्रभु, पूरा मन भर तोल दिया ॥ धृ० ॥ सिंधुपान करि भरे न जो मन, एक वचनमें तृप्त किया ॥ १ ॥ अजब खेल करुणाका तेरे, खूब तमाशा देखलिया ॥ २ ॥ हरि तेरी बलवंत कृपासे, नया नया रस नित्त पिया ॥ ३ ॥

पद १५८.

राधिका वल्लभ के बलि जैहों ॥ धृ० ॥ कृष्ण चरण नख चन्द्र विना नाहिं, दृगन चकोर लखै हों ॥ १ ॥ केकी करणन नाथ गाथ घन, तजि नाहिं शब्द सुनैहों ॥ २ ॥ स्वाति बूंद हरिनाम विना नहिं, चात्राकि रसनाहिं प्यैहों ॥ ३ ॥ अब बलवंत उदार द्वार तजि, और ठौर नाहिं जैहों ॥ ४ ॥

पद १६३.

फूल रही फुलवाई, मदन महीप साजि निज सैना जनु चले निशान बजाई ॥ धृ० .॥ मंद सुगंध पवन बृजबनमें, बहत परम सुखदाई ॥ युगल सरूप सिंहासन राजें, संग सखी समुदाई ॥ १ ॥ भूषण बसन पियरे तन धारे, शोभा बरनि न जाई ॥ छिरकत केसर रंग परस्पर, लखि अनुपम सुख पाई ॥ २ ॥

पद १६४.

आई वसंत ऋतु सुखदाई ॥ बृज जनके अति ही मन भाई ॥ धृ० ॥ उमँग बढी होली खेलनकी, बृज वामनके हिये समाई ॥ सो बलवंत अभिलाष देखि मधु, बाढी जिमि आहुनि घृत पाई ॥ १ ॥

पद १६५.

मुख मुरली मन मोहनि मूरत, देखत नैन सिरावत है ॥ ग्वाल बाल सँग वृन्दावनते, बेनु बजावत आवत है ॥ नटवर भेष अलौकिक शोभा, कोटिन मदन लजावत है ॥ निरखि निरखि बलवंत श्याम छबि, रैन दिना सुख पावत है ॥ १ ॥

पद १६६.

सघन बन कुंजन सुखदाई ॥ प्रिया पिय झूलें हरषाई ॥ श्याम घन घुमडि घटा छाई ॥ जहां तहं चपला चपलाई ॥

दोहा.

फूले चहुं दिस विपिन मधि, सुमन समूह अनूप ॥
सर सरितन सरसिज खिले, मानहु शोभा भूप ॥ १ ॥

मगंधनि सानी पुरवाई ॥ घटा मुद बुंदन झर लाई ॥ मनोहर श्री बन हरि याई ॥ लहर जमुना जल मन भाई ॥

दोहा.

रुचिर खंभ मनि जटित की, अद्भुत छबि दरसाय ॥
प्रगटे द्रुम लावण्यतां, जनु पावस ऋतु पाय ॥ २ ॥

ललित गुण वरणत मति हारी, गूंथि मनु शोभा लट डारी ॥ मुनिन मन पटली छबिधारी ॥ रचन झुला अति मन हारी ॥

दोहा.

राधा माधव रसिक बर, जो सुखमा के सार ॥
झूलें तामें मुदित मन, अलि बोलें बलिहार ॥ ३ ॥

भीर बिधु बदनिन की भारी ॥ गीत गावें दैदै तारी ॥ मनोहर बंसी धुनि न्यारी ॥ सुमन सुर वरषें सुखकारी ॥

दोहा.

निरखत झूलन छबिछटा, आँनद उर न समाय ॥
गीत बाल बलवंत सुनि, स्वामिनि मन मुसक्याय ॥ ४ ॥

पद १६७.

झूलत लाडिली घनश्याम ॥ ध्रु० ॥ ललित लता द्रुम मंजु मनोहर, मनहुं मीन ध्वजधाम ॥ १ ॥ धीर समीर कीर कल चातक, बोलत बैन ललाम ॥ २ ॥ मंद मंद गरजत बरसत घन, गान करत बृजबाम ॥ ३ ॥ त्रिभुवन सुन्दरतापर छबि लखि, लज्जित कोटिन काम ॥ ४ ॥ सो छबिलखि बलवन्त माधुरी, भे परिपूरण काम ॥ ५ ॥

पद १६८.

झूलत कुंज राधा श्याम ॥ टेक ॥ रत्न जटित हिंडोरना सखि, सरित तट सुखधाम ॥. द्रुम पुंज सघन निकुंज मंद, समीर मन अभिराम ॥ १ ॥ ललित नभ झुकि झूमि छाई, नील नीरद दाम ॥ दामिनी दमकते दुरत द्रुत, मंद वृष्टि ललाम ॥ २ ॥ मोर सुनि घन घोर बोलत, पिकन लहत विराम ॥ राग भरि मल्हार गावत, नवल वय की बाम ॥ ॥ ३ ॥ बलवंत मन दृग युगल पदतल, वसत आठो याम ॥ हटत नहिं क्षण एक संतत, जानि जिय विश्राम ॥ ४ ॥

पद १६९.

झूलैं श्यामा श्याम सरस ऋतु पावस छाई ॥ धृ० ॥ पुष्प पराग भई महि धूरी, महक विपिन सरसाई ॥ १ ॥ मधुकर गुंजारव वन मानहु, नारद बीन बजाई ॥ २ ॥ गीत मनोहर गोप वधुनके, कोकिल सुनत लजाई ॥ ३ ॥ श्री दंपति झूलन छबि निशि दिन, दृग बलवन्त समाई ॥ ४ ॥

पद १७०.

हिंडोरो झूलैं श्रीवृषभानु कुमारि ॥ धृ० ॥ चंद्रावलि ललितादि सहेली, संग सकल सुकुमारि ॥ श्याम सनेह सनी मृदु स्वर सब, गावत राग मल्हार ॥ १ ॥ पँचरँग रेशम डोर हिंडोरो, विरचो निज कर मार ॥ मंद मंद झूलन पर बरसत, रति रस भरीं फुआर ॥ २ ॥ मन मोहन आगम अवलोकत, चहुंदिशि दृष्टि पसार ॥ गोपिन गीत सरस सुनि केकी, कूक उठे इकबार ॥ ३ ॥ श्री गोविंद गोप गण मंडित, निरखि नवल बृजनारि ॥ हुलसि उठीं बलवंत चातकी, जनु घन घटा निहारि ॥ ४ ॥

पद १७१.

प्रिया संग झूलत कौन नई ॥ ध्रु० ॥ ललित लता द्रुम मिलित सघन बन, घटा सजल उमई ॥ चपला चमक फुवारन भींजत, चूनरि रंग मई ॥ १ ॥ सजनी सुघर सांवरे रंग की, हौं दृग देखि लई ॥ बोलन हंसन मंद मृदु मुसकन, चित चोरन चित ठई ॥ २ ॥ नख शिखांत शृंगार सुभगतर, गल भुज कमल दई ॥ नव नागरि दोउ गुणन आगरी, रमकन झूल रई ॥ ३ ॥ सो छबि बरणि सकै किमि कोविद, कविवर दिग विजई ॥ कुमरिकृपा बलवन्त रैन दिन, कुंज-केलि दृग छई ॥ ४ ॥

पद १७२.

झूलत श्यामा श्याम चलो री ॥ ध्रु० ॥ सघन बारिधर सोहित तडित जनु, लसत ललित बरजोरी ॥ कनक खंभ मणि जटित मनोहर, बेलि वलित चहुं ओरी ॥ १ ॥ नीलम डार परण पन्ननके, कलियन वज्र जडो री ॥ मानिक सुमपर श्यामराग मनु, मधुहित मधुप अरो री ॥ २ ॥ फल पुखराज प्रेम रस पूरण, बिधि निजकरन भरो री ॥ विलमे विहंग समुझ सांचे चित, नटत लेत चित चोरी ॥ ३ ॥ जग मग जाल जरकसी झलकत, पंचरंग रेशम डोरी ॥ विद्रुम पाट परम सुन्दर पहं, आसन अमल बिछोरी ॥ ४ ॥ तिहिं आसन आसीन जुगल जनु, प्रीति रूप इक ठौरी ॥ झोकन मंद झुलावत सखि गण, गान करत मधुबोरी ॥ ५ ॥ हंसि हेरत हरि ओर राधिका, सो सुख कहि न सकों री ॥ गोपीं गात मलहार मंजु मनु, मुद निधि उमंग परो री ॥६॥ अबलन युत चढि यानन अम्बर, सुरन समूह जुरो री ॥ अति आनंद मानि बरसावत, सुमनन भरि भरि झोरी ॥७॥

निरखि निरखि बलवंत विशद द्युति, उर आनंद बढोरी ॥
झूलें नित नयनन नँदनंदन, श्री वृषभानु किशोरी ॥ ८ ॥

पद १७३.

झूलत श्याम राधिका गोरी ॥ धृ० ॥ लता वितान तने मनहारी, हरित भूमि सब ठौरी ॥ कुंज जाल रंध्रन तनु आभा, फैलि रही चहुं ओरी ॥ १ ॥ घन घुमंड घहरात चहूं दिश, दामिनि दमक न थोरी ॥ परत फुआर सरस मन भावन, केकी शोर घनोरी ॥ २ ॥ पिय प्यारी पर करत छांहरो, निज पीताम्बर कोरी ॥ धीर समीर भीर वनितनकी, गायन गति चित चोरी ॥ ३ ॥ चूनरि चारु चमक चटकीली, चुवत चित्र रंग बोरी ॥ छबि बलवंत विलोकि अलौकिक, नवल नेह उमंगो री ॥ ४ ॥

पद १७४.

श्रीदम्पति पद पंकज शोभा, देखत सखि मैं ठगिहि गई ॥ धृ० ॥ तृप्ति होय कहु किहिं विधि आली, जब देखों तब नई नई ॥ १ ॥ दृग बिन बाणि बाणि विन लोचन, कैसे बरनी जाय दई ॥ २ ॥ यह बलवंत रहसकी बतियां, जिन जानी चुप साधि लई ॥ ३ ॥ सुख सागर प्रतिपल हिय बाढो, ज्यों ज्यों शुचिता अधिक भई ॥ ४ ॥

पद १७५.

जा नैयाके जुगल खिवैया ताहि कहा भवसागर डर है ॥ ॥ धृ० ॥ समरथ स्वामि स्वामिनी राधा माधव पद पर अब सब भर है ॥ बूड़त जक्त जहाज तहींते टूटी नाव हमारि उतर है ॥ १ ॥ जाके शिर पर अटल छत्र है ताकहं त्रिविध ताप कह कर है ॥ भगवद कहा कहो तिहि व्यापे जाको दो दो धन्वन्तर है ॥ २ ॥ काको भाग्य कहा कोउ माखे युग कर

एक सीस ऊपर है ॥ कत काहुहि बलवंत बदत अब एक नहीं दोके बल पर है ॥ ३ ॥

पद १७६.

जिन भूलेहु, प्रभुकी शरण लही ॥ बंधन टूट गये तब ही ॥ धृ० ॥ जो आवत प्रभु तारन ताको ॥ पात्रापात्र विचार नहीं ॥ १ ॥ विश्व विदित वृद दीन उधारन ॥ निगमागम बहु कथा कही ॥ २ ॥ ऐसे प्रभु बलवन्त नाथके ॥ रहो रैन दिन चरण गही ॥ ३ ॥

पद १७७.

यदुपति चरण कमल बलिहारी ॥ धृ० ॥ विषय विराग विभंजन अति मन रंजन अघ चय हारी ॥ १ ॥ भव संताप शमन सठ मन मद दमन विश्व उपकारी ॥ २ ॥ पूरण काम धाम सिद्धिनके तन त्रयताप निवारी ॥ ३ ॥ महिमा अमित अलौकिक वरणत कवि कोविद मति हारी ॥ ४ ॥ बसो सदा बलवंत मनस्सर सो पदकंज मुरारी ॥ ५ ॥

(पद मराठी भाषा)

पद १७८.

येई बा गुरुराया गुरुराया, पडतों तुमच्या पाया ॥ धृ० ॥ गौर इन्दुद्युतिसुंदर, धरणीधर्मधुरंधर ॥ येई० ॥ श्रीकृष्णनाम आननीं, मूर्ती मनोहर मनीं ॥ येई० ॥ दंड कमंडलु हातीं, पदी नूपुरें वाजती ॥ येई० ॥ मत्त छबी अलबेली, झळकते वेळो वेळीं ॥ येई० ॥ वरदहस्त प्रभु धरीं, बलवंताचे शिरीं ॥ येई० ॥

पद १७९.

कुठवरि प्रभु उपकार आपुले वाणीनें गावे ॥ नसे कृपेचा पार पदीं मस्तक ठेवुनी रहावें ॥ १ ॥ मातेवत पाळिलें

पित्यापरि सांभाळण केलें ॥ दुर्घट संकट पडतां देवा सर्वो-परि रक्षिलें ॥ २ ॥ धन धरणी आणि धाम विविध सुख दासा प्रति देशी ॥ ज्ञान भक्ति वैराग्य देउनी निज सेवा घेसी ॥ ३ ॥ क्षमा करुनि अपराध जनाचे तारिसि यदु-नाथा ॥ असो सदोदित बलवंताचा तव चरणीं माथा ॥४॥

पद १८०.

अभंग.

धरणे देऊनी उभा तुझे द्वारी ॥
आता कांहिं तरी सोय करा ॥
किती जन्म माझे याचिपरि गेले ॥
टाळियेले तुम्ही वेळो वेळां ॥
आतातरि करा जीवाचा उद्धार ॥
वारंवार तुम्हा प्रार्थियेलें ॥
कलियुगी तुमची होईल सुकीर्ती ॥
पसरेल सन्मति जनामाजी ॥
बलवंताचे मनी धीर नाहिं आतां ॥
देवा कृपावंता त्वरा करा ॥

पद १८१.

कां बसला रुसोनि कैसा धरोनि अबोला ॥ कृष्णा काहींतरि आज मुखानें बोला ॥ १ ॥ का इतुके निष्ठुर जाहला दीन दयाळा ॥ कृष्णा काही० ॥ २ ॥ तुम्ही अमुचे जीवनप्राण अहो गोपाळा ॥ कृष्णा काही० ॥ ३ ॥ सोडी न कदापि स्वामी तव चरणाला ॥ कृष्णा काही० ॥ ४ ॥ बल-वंतविनविता कंठी हा जिव आला ॥ कृष्णा काही० ॥ ५ ॥

पद १८२.

माझ्या जिवाच्या जीवना, कृष्णा येई बा लवकरी ॥ धृ० ॥
माझ्या प्रणाच्या पोषणा ॥ कृष्णा " " ॥ १ ॥
माझ्या नयनाच्या रंजना ॥ कृष्णा " " ॥ २ ॥
माझ्या मनाच्या मोहना ॥ कृष्णा " " ॥ ३ ॥
मज अनाथाच्या नाथा ॥ कृष्णा " " ॥ ४ ॥
माझ्या सुखाच्या साधना ॥ कृष्णा " " ॥ ५ ॥
माझ्या सौभाग्याचा राणा ॥ कृष्णा " " ॥ ६ ॥
दीन बलवंनाच्या प्राणा ॥ कृष्णा " " ॥ ७ ॥

पद १८३.

कृष्ण वदा गोविंद वदा, हरि हरी वदा, मुख भरुनि सदा ॥ धृ० ॥ श्रीहरिनाम सतत मुखिं घोका, तुम्हा न धोका होई कदा ॥ १ ॥ शमन करी भवदावानल हा, देई सुधारस पदा पदा ॥ २ ॥ मन मुकराचे हेंची मार्जन, हरी सर्व अंतर विपदा ॥ ३ ॥ ज्ञानमुक्तिकल्याण विरतिची, सहज वाढवी सुसंपदा ॥ ४ ॥ अनुभवसिंधु सहज साधन हे, ग्रहण करा मनिं त्यजुनिं मदा ॥ ५ ॥ राजयोग हा परम-सुलभ परि, दुर्लभ होय कुतर्कविदा ॥ ६ ॥ कृष्ण कृष्ण श्रीकृष्ण म्हणा, बलवंत दानि हे मुक्तिपदा ॥ ७ ॥

पद १८४.

जय राधा कृष्ण जय राधा कृष्ण जय राधा ॥ ह्मणतांचि दूर होती सर्वहि भवबाधा ॥ धृ० ॥ नामाच्या योगें सगुण रूप अनुभवलें ॥ घेतांचि नाम धांउनियां जन उद्धरले ॥१॥ भक्तांचा रक्षक तूंचि एक या काळी ॥ दुःखद्वंद्व दुरित सत्वरी हरी वनमाळी ॥ २ ॥ दंपतीपदीं बलवंत मिठी दृढ घाली ॥ पण शरणागत पालन अपुला सांभाळी ॥ ६ ॥

पद १८५.

ही दुष्ट वासना सुटे न केले उपाय मी किति तरी ॥ मन मर्कट विषयासव पिउनी बसलें अमुचे शिरीं ॥ बंड करी किती तरी आवरतां नावरे क्षणोक्षणिं नाना छन्द धरी ॥ बोध बोधितां वाणी थकली उमजे ना तिळभरी ॥ अतां हरी कृपा करीं निजमाया आवरी दयाळा बळवंता धरि करीं ॥

पद १८६.

काय हरिमायेची लीला, शंभु स्वयंभू स्वभू पाहुनी भ्रमले मनिं इजला ॥ धृ० ॥ बीजकल्पना मनीं स्फुरतां, शाखा पल्लव पुष्पफलां सह विश्वविटप उठला ॥ १ ॥ बाग बहुरंगी बघुनि फसला, विषयछंद लागला जिवाला निजानंद भुलला ॥ २ ॥ चाल ॥ या चक्षुबाहुल्या मधीं विश्व खेळतें ॥ लावितां उघडतां लय उत्पत्ती होते ॥ एकत्र ठेवितां द्वैत सकळ नासतें ॥ जें स्वरूप तुमचें तुम्हां प्रगट भासतें ॥ पहावा ब्रह्मींचा सोहळा, सच्चित घन बलवंत श्रीहरी सर्वठाईं भरला ॥ ३ ॥

पद १८७.

चरणीं देई ठाँव विठोबा हो ॥ धृ० ॥ प्रपंचतापें बहुत तापलों ॥ अति व्याकुळ तव पदीं पातलों ॥ धरुनि एकविध भाव ॥ १ ॥ प्रणतपाल भवजालविमोचन ॥ पतितपावन तूं करुणाघन ॥ जगि गाजे तव नांव ॥ २ ॥ क्षणिक कनक संपदा नको मज अविनाशी निज दाविं पदांबुज ॥ बलवंता झणिं पाव ॥ ३ ॥

पद १८८.

देई दर्शन दासा पंढरी ईशा हो ॥ धृ० ॥ दूर देशहुनि आलों येथें पुरवी माझी आशा हो ॥ १ ॥ भवसिंधूमधिं

भ्रमतां थकलों, मुक्ति करी भवपाशा हो ॥ २ ॥ प्रणतपालपण स्वामि आपुले भरले चारी आशा हो ॥३॥ बलवंताची हीच प्रार्थना, न करी स्वामि निराशा हो ॥ ४ ॥

पद १८९.

वृन्दावन सोडुनी कशास्तव आलां तुम्हीं पंढरी, सांगा मज लागीं श्रीहरी ॥ धृं० ॥ कुठे ठेवला मुकुट मनोहर वंशवेणु त्यापरी, गुंजमाला न च हृदयावरी ॥१॥ वेश पालटुनि उभे ठाकलां ठेवुनि कर कटिवरी, विटेवर का मूर्ति साजिरी ॥ २ ॥ कोशचतुःशत चालुनि आलों घ्याया दर्शन परी, दिसेना कृष्णमूर्ति कां तरी ॥ चाल ॥ तुम्हीं कृपावंत भगवंत जगीं म्हणवितां ॥ निजदास मनोरथ पदोपदीं पुरवितां ॥ मज निराश करुनि कशास हो फिरवितां ॥ दावुनि इच्छा बलवंताची पूर्ण करा झडकरी ॥ मनोहर छबि सांवळि गोजिरी ॥

पद १९०.

दुरुनी आलों चरणा पाशी ॥ कांहीं बोला या दासासी अगा विठोबा ॥ धृ० ॥ कृपा दृष्टिचा भुकेलो, सन्मुख येवुनि ठाकलो ॥ १ ॥ नाम तुमचें करुणा कर, गाजे कीर्तीचा गजर ॥ २ ॥ परिसावी विज्ञापना, देवा रुक्मिणी रमणा ॥ ३ ॥ मौन करोनि धारण, स्वस्थ बैसलां आपण ॥ ॥ ४ ॥ परी अतां विश्वंभरा, कृपा दृष्टि फेकुनि जरा ॥ ५ ॥ पहा दशा धर्म देशाची, होय सीमा हो क्लेशाची ॥ ६ ॥ पहा सांप्रत भूमंडळीं, झाली धर्माची रांगोळी ॥ ७ ॥ दुष्ट कली हा मातला, धर्म समूळ बुडविला ॥८॥ द्विज धेनु संत जन, विकल आसती रात्रंदिन ॥ ९ ॥ दुःखें वरणिली न जाती, विलोकूनी फाटे छाती ॥ १० ॥ आतां काहीं दया माया,

यावी आपणा पंढरीराया ॥ ११ ॥ कृपा वचन आपुलें आता आठवावें भले ॥ १२ ॥ अगा पार्था जेव्हां जेव्हां, धर्म ग्लानी होई तेव्हां ॥ १३ ॥ कराया मी धर्मोद्धार, युगायुगी धरि अवतार ॥ १४ ॥ करुनि दुष्टांचा संव्हार, हरी सज्जनाचा भार ॥ १५ ॥ पूर्ण करोनी ते आतां, ब्रीद राखी पंढरीनाथा ॥ १६ ॥ मान्य करोनी विनंती, अभय ठेवावें बळवंतीं ॥ १७ ॥

पद १९१.

किती दिवस तरी राहाशिल डोळे झाकुनि बा यापरी ॥ कांहिं तरी विचार मूढा करीं ॥ धृ० ॥ बाल्य आणि तारुण्य हि गेलें देह जाहला जरजरी ॥ तद्पि विषयाची मनि तरतरी ॥ १ ॥ धना पाहुनी धावसि मागें क्षुधित श्वानापरी ॥ असुनि संपदा बहुत निजघरीं ॥ २ ॥ पाहुनि नारी तोषित भारी नाना चेष्टा करी ॥ इंद्रियें शिथिल जाहली जरी ॥ ३ ॥ अधिकाराची पिशाच्चबाधा बाधे स्वप्नांतरी ॥ येइना निद्रा कां क्षणभरी ॥ ४ ॥ धाम धरणि सुत दारा यांची चिंता निशिदिन करी ॥ जाहला मरणोन्मुख बा जरी ॥ ५ ॥ चाल ॥ नव विवाह व्हावा असे मनी घोळतें, मदनानें ह्मणतो शरीर हें फाटतें, सुंदरा अप्सरा मिळो असें वाटतें, दश सहस्र मुद्रा दिधल्या न च फार ते ॥ जाये विण वाया धनधरणीचें सुख हें मिळे न उपवर जरी पहा कोणि पुनर्विवाहित बरी ॥ कांहीं तरी० ॥ शूल मस्तकी उठतो घेतां कृष्णनाम आननी ॥ थकेना बडबडतां निशिदिनी ॥ दानास्तव पैसा देण्याला ह्मणसी मीं बहुऋणी ॥ रांड पाहातां घरी परवणी ॥ वेदविहितधर्मा प्रति सोडुनि पाखंडाचा धनी ॥ बहुत देई लोका शिकवणी ॥ सुरा पिउनियां असुरवृत्तिमाधिं अंध

धुंद होउनीं ॥ कांहिं विधिनिषेध नाहीं मनीं ॥ आतां तरी कांहीं उमज बारे काळ खेळतो शिरीं ॥ कांहीं तरी विचार मूढा करीं ॥

पद १९२.

(अभंग)

कोणतें साधन करूं भेटी साटीं ॥
सांगा जगजेठी कांहीं तरी ॥ धृ० ॥
जप तप ध्यान किंवा आत्मज्ञान ॥
कीं वनसेवन करूं सांगा ॥ १ ॥
ज्याच्या योगें तुम्हीं होतां हो संतुष्ट ॥
तेंच मज इष्ट दावी मज ॥ २ ॥
जीव कासाविस होतो किती तरी ॥
दयावंता हरी शिणवूं नका ॥ ३ ॥
बलवंताची स्थिती जाणता यदुपती ॥
आतां प्राणनाथा भेट द्यावी ॥ ४ ॥

पद १९३.

कोणाच्या मुखाकडे पाहूं-हरि विण कैसें राहूं ॥ धृ० ॥ प्राणनाथ मथुरापुरिं गेले-कोणा हृदया लाऊं ॥ १ ॥ दिसे सकल संसार शत्रुवत्-तात मात पति भाऊ ॥ २ ॥ निर्जन नगर भवन जणु कानन-कोठें जाउनि राहूं ॥ ३ ॥ बलवंताचें केवळ जीवन-कृष्ण प्रलंबित बाहू ॥ ४ ॥

पद १९४.

यदुपती कधीं मी पाहिन या नयनानें ॥ श्रीपती कधीं ठेविन डोई प्रेमानें ॥ धृ० ॥ झुरतें मनिं निशिदिनिं विरहवह्नितापानें ॥ क्षण युगसम जाई मजसी तद्विरहानें ॥ ॥ चाल ॥ हें वेड लागलें जिवास देवा कुठून ॥ सुखसम्पत्ती

मम सर्वहि गेली लुटून ॥ सुत तात मात प्रिय नातें गेलें सुटून ॥ जिव श्यामसुन्दरा स्मरतां पडतो तुटून ॥ मन मोहित झालें त्या अनुपम स्वरूपानें ॥ होईल शान्ति बलवंत रूपरसपानें ॥

पद १९५.

किंचित इंदुवदन दाउनियां वेड लावलें आम्हांप्रति ॥ काय सांवळ्या केली स्थिति ॥ धृ० ॥ पुत्र कलत्र सुमित्र बंधुगण तुटली ममता सम्पत्ती ॥ नष्ट जाहली कुलरीती ॥ वेश वृत्ति पाहुनी आमुची जगीं हांसती लोक किती ॥ बोल बोलती तीक्ष्ण अति ॥ सुखसंसार बुडाला सर्वचि नसे राहिली देहस्मृती ॥ विरह दाहची नसे मिति ॥ वनि अनवाणी शोधित थकले व्यथित जाहले सांगुं किति ॥ भ्रमिष्ट जाहली माझि मती ॥ योग्य नसे बलवंत दयाळा तापविणें लाउनि प्रीती ॥ भेट एकदा प्राणपती ॥

पद १९६.

थकले साधन झिजली काया ॥ तूंचि उपाय आतां यदुराया ॥ धृ० ॥ भ्रमता भवनिधि मधिं बहु थकलों ॥ मनिं येऊं दे दीनाची माया ॥ १ ॥ जन्म अनेक याचि परि गेले ॥ पुनरपि आयु चालली वाया ॥ २ ॥ आतां विलंब न करीं बलवंता ॥ दावीं त्वरित आपुले पाया ॥ ३ ॥

पद १९७.

कुठवरी दयाळा अंत पाहसी कंठीं जिव आला ॥ धृ० ॥ बुडतों मी संसारसागरीं उपाय तो थकला ॥ अतां हरी, क्षमा करीं, धरी करीं सत्वरीं दयानिधि शरण पातलों तुला ॥ पतितपावन नाम आपुलें जगतीं स्तव भरला ॥ लक्ष करी, ब्रिदावरी, दृष्टि भरी अंतरी उद्धरीं बळवंता बाळा ॥

पद १९८.

रूप पाहतां डोळे भरी ॥ मन स्थिरावलें अंतरीं ॥ प्रेम पाशीं पडलें मन ॥ गेलें प्रापंचिक व्यवधान ॥ काय करावें साधन ॥ नाहीं अपुल्या हातीं मन ॥ ज्याची ठेव त्यानें नेली सर्व पीडा माझी गेली ॥ वरद हस्त तुमचा हरी ॥ राहो बळंवताचे शिरी ॥

पद १९९.

मन जडलें तव स्वरूपीं पाहुनि छबि सांवळी गोजिरी, पंचप्राण विव्हळती मन हें क्षणभर धीर न धरी ॥ पळ पळ युगसम जाती वाटे विषाद मज बहु परी ॥ नको नको हा वियोग दुःख हें भोगूं मी कुठवरी ॥ किती दुराग्रह धरिसी माझ्या इतक्या विनती वरी ॥ वदन चंद्र पाहुं द्या आपुला आम्हांस डोळेभरी ॥ प्रभुतापद संपदा कदापी नच वागे अंतरीं ॥ सुषमा सार स्वरूप वसो बलवंतमनीं श्रीहरी ॥

पद २००.

स्वरूप अनुपम तुमचें पाहुनि मोहित झाली मती ॥ सुचे ना कांहीं एक मजप्रती ॥१॥ विरहानल चेतला शरीरीं काय जाहली स्थिती ॥ वेदना असती मजप्रति किती ॥ (चाल). मी प्राण अर्पिले तुम्हांस हो श्रीहरी ॥ हा भेद भाव मग कशास आहे तरी ॥ मी पतीत तुम्ही पावन जोडी खरी ॥ प्राणप्रिया मी प्राणा मुकतें अशी जाहली स्थिति ॥ धांव लौकरी आतां श्रीपती ॥

पद २०१.

जोडलें नातें गोविंदासी, अर्पुनि मस्तक पद कमलासी ॥ ॥धृ०॥ रूपवंत गुणवन्त कृपाळू, सोडीना दासी ॥१॥ मुकुट मयूर मकराकृतकुंडल, द्विभुज वेणु वदनासी ॥ २ ॥ चिन्मय

लोक अलौकिक लीला, नित्य विहारविलासी ॥ ३ ॥ सकल विश्व परिवार हरीचे, जाणे जो सुख त्यासी ॥ ४ ॥ शंका व्यथा शोक भय भ्रम हे, गेले सर्व लयासी ॥ ५ ॥ पालन पोषण रक्षण याची, चिंता नाहीं अम्हांसी ॥ ६ ॥ तो आमुचा प्रिय अम्हीं त्याच्या, पदाम्बुजाच्या दासी ॥ ७ ॥ माय बाप पति बंधु सोयरा, धन धरणी मीरासी ॥ ८ ॥ खाणें खेळणें चरणि लोळणें, सेवा सुख अम्हांसी ॥ ९ ॥ हें माहेर बळवंत असे तव, घाल मिठी चरणासी ॥ १० ॥

पद २०२.

नाम निकट संबंध गुरूनि, लाउनि अमुचे शिरीं ॥
आणुनियां घातले कृपानिधि, तुमच्या चरणावरी ॥ १ ॥
माय बाप पति बंधु एक पद, तुमचे मज श्रीहरी ॥
पदरीं पडले अतां मी ठेवा, उचित दिसे त्यापरी ॥ २ ॥
तुम्हां वाचुनि नसे आतां, मज कांहीं गति दूसरी ॥
डाग तुझा बलवंत लागतां, सुटेना सर्वोपरी ॥ ३ ॥

पद २०३.

नव्हता कांहीं संबंध जोंवरी, तुम्हासी श्रीहरी ॥
सर्वप्रकारें करुनि विपत्ती, होती माझे घरीं ॥ १ ॥
तुम्हां वरूनि श्रीवरा सुखी जहालों मी सर्वोपरी ॥
अतां अव्हेर न करा, अर्पिलें मस्तक चरणावरी ॥ २ ॥

(चाल)

तुम्ही माझे प्रिय सोयरे अहां श्रीहरी ॥ ध्या कांहीं तरी काळजी माझी अंतरीं ॥ कां दूर ठेविले मला आजवरि तरी ॥ पहा मीन जळाविण व्याकुल मी त्यापरी ॥
केल्याचा अभिमान जरी न च, धराल तुम्हीं अंतरी ॥
तुज वाचुनियां बलवन्ताला, कोण दुजा आवरी ॥ ३ ॥

पद २०४.

येतानां जातानां पाहतां तुम्हाकडे ॥ दुःखाचे पँवाडे गाऊं किती ॥ १ ॥ एक दिन तुम्हां येईल कंटाळा ॥ हेंचि भय दयाळा वाटे मज ॥ २ ॥ याला काय तरी करूं मी उपाय ॥ नसे दूजी माय बळवंता दीनाची ॥ ३ ॥

पद २०५.

जरि तान्हें बाळ, गुंतलें खेळाया ॥ माय बापें तया, काय विसरावें ॥ १ ॥ माया जाळीं जीव, गुंतला अज्ञानीं ॥ तुम्हीं ज्ञान खाणी, त्यजिलें कैसें ॥ २ ॥ नवल येवढें वाट-तसे मना, कैसा पितृवाणा भुलला हो ॥ ३ ॥ अतां तरी देवा, संभाळी बळवंता ॥ त्वरित कृपावंता, तारीं दीना ॥ ४ ॥

पद २०६.

वत्स धेनुसी जरी मुकलोनी जाय ॥ परि ती न माय विसरे बाळा ॥ १ ॥ तैसी कृष्णाबाई आमुची माउली ॥ भक्तासी संभाळी भूल पडतां ॥ २ ॥ होती अपराध पदों-पदीं किती ॥ परि दयावंत देव सदा ॥ ३ ॥ वायु अनुकूल ठेवुनियां सदा ॥ सेवकाची नौका लावी थडी ॥ ४ ॥ भुलोनी स्वधर्मा घडतां व्यभिचार ॥ परि तो दातार सोडी ना हो ॥ ५ ॥ बलवंताचे एक श्रीपदीं माहेर ॥ तेथें नसे अव्हेर कोणा वेळीं ॥ ६ ॥

पद २०७.

चरणीं शरण आलों तुला, त्रिविधतापें जिव संतापला ॥ सोडवी या दुखांतुनि मला ॥ दीनदयाळा श्रीहरी ॥ धृ० ॥ नाम तुमचें करुणाकर, चहुदिशिं कीर्तिचा गजर ॥ दया

करि हरि या दीनावर, यादवनाथा रे सत्वरी ॥ १ ॥ लज्जा द्रौपदीची राखली, अंबरें सभे माजि पुरविली ॥ नाम घेतां गणिका तारली, विलंब न केला क्षणभरी ॥ २ ॥ करुणा करुनि मज करिं धरीं, किंवा काढीं घरा बाहेरी ॥ बैसेन तुझ्या दारावरी, निश्चय हाचि अंतरीं ॥ ३ ॥ माझी याचना तरि किति, उदार दाता, लक्ष्मीपति ॥ कृपणता सोडि अतां श्रीहरी, लक्ष ठेवूनि बिरुदावरी ॥ ४ ॥ तुज वांचुनियां उर्वीवरी, न च मजला आश्रय तिळभरी ॥ बुडतों आतां भवसागरीं, दयाळा बळवंता उद्धरी ॥ ५ ॥

पद २०८.

चरणीं शरण आलों देवा, सत्वर करी करुणा ॥ धृ० ॥ आलो सरी सहित परिवार, केला जलक्रीडा विस्तार ॥ नक्रइक धाउनि बल आगार, बळकट फार पदिं धरले ॥ १ ॥ थकलों करिता युद्ध अपार, जरजर झालीं गात्रें फार ॥ बुडतों अतां नसे आधार, ठेविले भार तव चरणीं ॥ २ ॥ पाहुनि संकट अति भयदाय, गेला त्यजुनि स्वजन समुदाय॥ ज्यास्तव घालविलें वय काय, हाय हाय व्यर्थचि हें ॥ ३ ॥ ब्रिद तव शरणागत प्रतिपाल, करुणाकर तूं दीनदयाल ॥ रक्षिले व्रजीं धेनु गोपाल, कीर्ति विशाल जगिं गाजे ॥ ४ ॥ होउनि पार्थाचा कैवारी, केली निष्कौरव महि सारी ॥ उद्धरियेली गौतम नारी, त्रिभुवन धनी वासुदेवा ॥ ५ ॥ श्रवणीं पडता करुणारव, स्वर्गीं गहिंवरला माधव ॥ गरुडा त्यजुनि आर्त बांधव, धांवुनि गजोद्धार केला ॥ ६ ॥ गुणगण हरिचे जगीं अपार, गाती प्रेमें वारंवार॥ म्हणे बळवंत त्यासी संसार, शुद्ध असारसा भासे ॥ ७ ॥

पद २०९.

॥ अभंग ॥

आम्हीं करावी कामना ॥ तुम्ही पुरवावी श्रीरमणा ॥ १ ॥
स्वामी सेवकाची रिती ॥ ऐसी आहे बोले स्मृती ॥ २ ॥
जैसी बालका आवड ॥ माय लावी त्याची तोड ॥ ३ ॥
तैसे तुम्हीं दीन पाळा ॥ पुरविता सुख सोहळा ॥ ४ ॥

पद २१०.

श्याम सुन्दरी सुख करणी भवतरणी वृषभानुकिशोरी माते वरदे वरदे वरदे ॥ धृ० ॥ प्रेममयझरी सुखकन्दे, जगवन्दे भक्त भयहारी ॥ बळवंतें निदिध्यास धरली तव चरणीं आस ॥ श्यामे न करी निराश यास करिं धरी ॥ माते वरदे वरदे वरदे ॥

दोहा

सदा दास के दाहिने, राधा राधाकंत ॥
दंपति पद "पदमाल" यह, अर्पणकृत बलंवत ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–

पं० लक्ष्मीनारायण ज्योतिषी,
जनकगंज–लश्कर,
ग्वालियर.

खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर"–स्टीम्–प्रेस,
मुंबई.

शुद्धाशुद्ध पत्र

यह शुद्धाशुद्धपत्र कापी टूकापी छपने व प्रूफरीडरके पास दुबारा प्रूफ न पहुँचनेसे लिखना पड़ा—पाठकजन कृपा करके इसके अनुसार पुस्तक शुद्ध करलें—

पृष्ठसं०	पदसं०	पदकी पंक्तिसं०	अशुद्ध	शुद्ध
४	८	१	श्याम	आगो श्याम
६	१३	४	रसाला ॥	रसाला ॥ २ ॥
७	१५	३	धर्मरु	धर्मऽरु
८	१७	१	आयों	आयो
९	१९	१३	सघन	सबन
११	२७	९	भव	मन
”	”	१३	तर	तट
१३	३४	१	भली	भली बनी ॥
१४	३६	२	जटित	जटितमणि
”	”	७	द्युति	देहद्युति
१५	३७	१	मूरत	मूरति
”	”	७	कोरट की	कोर टकी
”	३८	१	हरी	हरि
१६	४०	३	चरन	चरत
”	”	४	बलिन	वलित
”	”	५	मंजुल माल	मंजु तमाल
”	४१	२	नर पर	नापा
१७	”	२	जो परमलोकवाशी	जो परमलोकवासीपरमेश्वरहै॥६॥
”	४३	१	॥	॥ ध्रु० ॥
१८	”	३	कुबेरके सर	कुबेर कैसर
”	४५	३	खडा	खड्ग
१९	४६	६	रखे	रखैं
२१	५२	१	साया	माया
३१	७२	६	बात	बान